स्वर्णस्मृति निदिध्यासन अंक

१९५२-२००२ 50 साक्षात्कार स्वर्णजयंती

भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 3 | 15.5.2003 गुरुवार (मई- जून) | वार्षिक चंदा : 50.00

'ताड़देव' के परिसर में प.पू. गुरुजी व भक्तगण के साथ प्रवेश करते मा. श्री अरुण शौरीजी

प.पू. स्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी के साथ मा. शौरी साहेब, श्री महेन्द्र कपूरजी, श्री रोहन कपूर और प.भ. मल्कानी साहेब

प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई के साथ मा. शौरी साहेब, पू. महेन्द्र बापु, पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, प.भ. मल्कानी साहेब और प.भ. मेहता सेठजी

प.पू. काकाजी की पुष्प समाधि पर प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी व प.पू. दिनकरभाई के साथ परिक्रमा करते मा. श्री अरुण शौरीजी

'शिलालेख' का अनावरण करते प.पू. दिनकरभाई व प.पू. भरतभाई

संस्मृत्य संस्मृत्य.... विस्मयो मे... हृष्यामि च पुनः पुनः

[याद कर-करके मुझे आश्चर्य हो रहा है... मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ ! — भगवद् गीता - १८,७७]

सर्वप्रथम तो कोटि-कोटि वंदन हों प.पू. गुरुजी की अजोड़ गुरुभक्ति को... वाकई प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति हर एक साधक के लिए दीप स्तंभ रूप बन कर पथप्रर्दशन करती रहेगी।

प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी होने की बात जो भी सुनता, वह सहज बोल उठता कि –

हाऊ इज़ इट पोसिबल ?

अनबिलीवेबल ! इम्पोसीबल टास्क !

पू. वशीभाई तो पाँच-छः बार बोले कि –

प.पू. काकाजी की स्मारक डाक टिकट जारी होने बारे जब-जब सोचते हैं, तो ऐसा लगता है– जैसे कि एक ड्रीम हो...

पू. वशीभाई तो मुंबई में **'मेसो' कंपनी के डायरेक्टर** हैं, कई कितने बड़े-बड़े व्यापारियों के बीच में बैठते-उठते हैं। बाहर वाले उन्हें जब इस बात की गरिमा बताते हैं, तब हमें ख्याल आता है कि **यह आम बात नहीं, बल्कि सच में एक बहुत बड़ी घटना बनी** है... असल में प.पू. काकाजी ने हमारा यह मनोरथ इतनी जल्दी पूरा किया कि हमें ख्याल ही नहीं पड़ता कि यह कितना बड़ा इवेन्ट बन गया !

जो-जो इस उत्सव में आए... यहां से जाने के बाद भी उनकी चित्तपट्टी पर इस उत्सव की मधुर-चिरंजीव स्मृतियाँ किस कदर छाई हुई हैं, वह **सांकरदा** से इस उत्सव में आए **पू. स्नेहलस्वरूपस्वामी** द्वारा लिखी निम्न मर्मस्पर्शी पक्तियों से स्पष्ट पता चलता है–

'सचमुच आपने काकाजी को अखंड धार कर प्रगट किया है। उसका मूर्तिमान दृष्टांत देखना हो तो इस ***उत्सव में बीते साढ़े चार घंटे... कुछ और याद ही नहीं आया और ना ही खाने-पीने की सुध रही। बस केवल ब्रह्मानंदी मस्ती में डूब गए...*** *प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी का जो भव्य मनोरथ था कि अक्षरधाम यहां धरती पर उतारना... उसका दर्शन आपके द्वारा तैयार हुए इन जबरदस्त परिवारों से हुआ...* ***प.पू. काकाजी की टिकट भी कितनी लाईव ?*** *जो कोई भी इस टिकट में इस दिव्याति–दिव्य स्वरूप का दर्शन करेगा, उन सभी को अक्षरधाम के संस्कार पड़ेंगे...*

धन्य है आपकी पराभक्ति को... रास... महेन्द्र कपूर के भजनों तथा जबरदस्त भव्य केक अभी भी नज़र समक्ष तैर रहा है।

आपके जो आशीर्वाद मिले, वह तो यहां प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने भी सभी संतों को व हरिभक्तों को भी बात करी... ***'शिवलाल सेठ'*** *की जो बात आपने करी, वह सुन कर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी भी इतने राजी हो गए कि ना पूछो बात...*

ऐसे भव्य से अति भव्य उत्सव का लाभ हमें मिला उससे खूब-खूब आनंद हो गया...'

पिछले चार-पाँच महीने से जिस मंगल अवसर– प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती की खूब बेसब्री से राह देख रहे थे, वो दिन यानि **30 मार्च**–रविवार ताड़देव के आँगन में आ खड़ा हुआ... प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट जारी होने की तारीख भी 30 मार्च निश्चित हुई थी ! तब से भक्तों के दिल की उमंग-उत्साह-भावना देखते ही बनती थी... चारों ओर संतों, युवकों, बहनें, गृहस्थ प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने और हमें भेंटस्वरूप मिले प.पू. गुरुजी को राजी करने की एकमात्र भावना से जुटे दिखाई पड़ते थे...

करीब एक महिने पहले से एक ओर ऊपर ठाकुरजी के हॉल में प.पू. काकाजी महाराज का जीवन परिचय कराती छोटी-सी प्रदर्शनी की तैयारियाँ होने लगीं क्योंकि पोस्टल डिपार्टमेन्ट व गवर्नमेन्ट के नवपरिचित लोग इस उत्सव में आने वाले थे.... दूसरी ओर प.भ. अनिलजी, पू. निमित्तस्वामी व प.भ. आशिष वगैरह स्वागत गेट, स्टेज इत्यादि, तो– बहनें-भाभियाँ तिरंगे झंडे के रूप में बनाई जाने वाली फूलों की लड़ियाँ बना रही थीं। निमंत्रण कार्ड के लिए दिन-रात की सेवा चालू थी... जिसे-जिसे जो भी सेवा मिली थी, वहां वह देह, मन, बुद्धि गिने बिना लग पड़ा था क्योंकि **यह तो हम सभी के लिए अत्यंत गौरव का व जीवन का स्वर्ण अवसर जो था।**

प.पू. गुरुजी के अंतर की इच्छा थी कि इस मंगल अवसर पर चिरंजीव स्मृति के रुप में एक **'शिलालेख'** पर शुरुआत से उत्तर भारत में प.पू. काकाजी द्वारा किए गए अथक् परिश्रम का संक्षेप विवरण लिखा जाए। ताकि यह शिलालेख इतिहास का साक्षी बन कर हर एक को मानव स्वरूप में प्रगट हुई इस दिव्य विभूति की पारदर्शी दृष्टि, दृढ़ गुरुनिष्ठा और अजोड़ गुरुभक्ति का परिचय देता रहे।

परम पूज्य गुरुजी से जब सेवकों ने पूछा कि– गुरुजी, आपको यह शिलालेख का विचार आया किसमें से ? तब परम पूज्य गुरुजी ने बताया कि 1969 में जब पहली बार वे दिल्ली आए, तब दिल्ली में 'स्वामिनारायण' धर्म से परिचित तो कोई था ही नहीं... कोई प्रवृत्ति ही नहीं थी। सो, भारत साधु समाज से त्रिमूर्ति भवन–जहां पंडित जवाहरलाल

नेहरूजी का स्मृति संग्रह बनाया है, वहां तक वे पैदल चलते-चलते जाते। वहां उन्होंने ऐसी एक शिला देखी थी जिस पर भारत की आज़ादी की अर्धरात्रि के समय यानि 14 अगस्त 1947 को प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूजी द्वारा किया गया संबोधन लिखा हुआ है। 30-32 वर्ष पहले यूं देखी हुई इस शिला को परम पूज्य गुरुजी की आज्ञा से प.भ. अनिलजी, प.भ. आशिष, प.भ. योगेशजी इत्यादि देखने गए। सेवक लोग तो परम पूज्य गुरुजी की शार्प मेमरी के बारे ही सोच कर आश्चर्यचकित हो गए।

प.भ. अनिलजी एवं प.भ. आशिष ने प.पू. गुरुजी की इच्छा को मूर्तस्वरूप देने पत्थर की तलाश करनी शुरु कर दी। जयपुर जाते हुए रास्ते में आते 'बहरोड़' पर प.भ. अनिलजी के ही एक मित्र की फैक्टरी में से पत्थर लाना निश्चित हुआ। प.पू. गुरुजी खुद उस पत्थर को देखने दो बार गए व सारा नाप वगैरह दिलवा कर उसका डिज़ाईन तक बताया। पत्थर 10 फुट के करीब लंबा और लगभग12-13 टन का होने के कारण उसे दिल्ली तक लाना खूब कठिन था। प.भ. आशिष, प.भ. योगेश शर्मा व प.भ. धर्मपाल ने दो दिन बहरोड़ रुक कर ट्रक वगैरह की व्यवस्था की। उत्सव से छः दिन पूर्व ही पत्थर ट्रक में आया। पत्थर अत्यधिक भारी होने के कारण ट्रक पूरा एक ओर काफी झुका हुआ था। खुद ट्रक ड्राईवर ने बताया कि **मैं जब भी कहीं और जगह पत्थर लेकर जाता हूँ, तो मुझे हमेशा जुर्माना भरना पड़ता है। पर, यह पहली बार ऐसा है कि ट्रक यूं एक ओर झुका हुआ होते भी किसी जगह मुझे किसी ने रोका नहीं और ना ही कोई जुर्माना लगा। यह जरुर भगवान स्वामिनारायण का करिश्मा है। मैं तो आज यह सेवा करके धन्य हो गया** ! अत्यधिक भावावेश में बार-बार यह दोहराते हुए उस ट्रक डाईवर के चेहरे की खुशी को शब्दों में बयान करना मुश्किल है। **प.भ. सुशील भास्करजी** के द्वारा क्रेन मंगा कर प.पू. काकाजी के स्मृति स्थल की एक लॉन में पत्थर को उतारा गया।

प.भ. अनिलजी ने इस शिलालेख को तैयार करने में दिन-रात मानो एक कर दिया क्योंकि चार-पाँच दिन में ही सारा विवरण लिख कर तैयार कराना था। **प.पू. गुरुजी जब भी वह शिलालेख का कार्य देखने जाते, तो प.भ. अनिलजी को 'थेंक यू' बोल कर आते।** प.पू. गुरुजी के ऐसे प्रेमभरे वचनों से बल पाकर प.भ. अनिलजी ने भक्ति भरे परिश्रम से खूब ही सुंदर शिलालेख तैयार करवा दिया।

पहले 1990 में सरकार द्वारा 'स्वामिनारायण मार्ग' व 'काकाजी लेन' नाम दिलवाना, पिछले वर्ष 'स्वर्णजयंती द्वार' बनवाना, फिर स्मृति डाक टिकट निकलवाने की भाँति यह **'शिलालेख'** भी अपने आप में एक अद्भुत विचार है ! साथ ही स्मारक डाक टिकट के निमंत्रण कार्ड के पीछे 11 वर्ष पूर्व निकली गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मारक डाक टिकट सभी मुक्तों को प्रसादी रूप देने प.पू. गुरुजी ने लगवा कर भिजवाई। यह भी अपने आप में अनूठा विचार तो था ही, परंतु इससे भी अधिक **प.पू. गुरुजी के भक्ति भरे दिल का प्रतीक है।**

प.पू. गुरुजी की बहुत इच्छा थी कि प.पू. काकाजी की मूर्ति की अच्छी **'रंगोली'** बनाने वाला कोई कलाकार मिल जाए। सौ. शोभनाभाभी की छोटी बहन सौ. दीप्ति – जो कि मुंबई रहती है, उसे प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक लगाव है। सो, उसने प्रसिद्ध **'रंगोली सम्राट' श्री गुणवंतराय मांजरेकरजी** से संपर्क किया और उन्हें प.पू. गुरुजी से मिलवाया। साक्षात्कार स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में श्री मांजरेकरजी दिल्ली मंदिर आए और ठाकुरजी के सम्मुख प.पू. काकाजी की इतनी सुंदर रंगोली उन्होंने बनाई कि **जो भी देखता वो आश्चर्य से पूछता कि यह पेईटींग है या रंगोली ?** इससे भी अधिक मांजरेकरजी प.पू. गुरुजी के सहज व सरल वर्तन एवं मंदिर के सारे माहौल को देख कर इतने अधिक खुश हो गए कि बोल उठे – **'मैं बहुत जगहों पर अब तक गया हूँ, पर यहां सबके चेहरे पर मैंने जो अपनापन व प्रसन्नता देखी है, वह किसी अन्य जगह पर नहीं देखी। मैंने यहां कुछ अलग ही दिव्य आंदोलन महसूस किया। मुझे यहां आनंद आया है। अब की बार तो बैंक की क्लोज़िंग के कारण मुझे मुंबई जाना जरुरी है, पर मैं दीवाली पर दोबारा यहां आकर प.पू. गुरुजी की मूर्ति की रंगोली बनाऊंगा।'** श्री मांजरेकरजी ने प.पू. काकाजी की रंगोली की सेवा करके प.पू. गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता तो लूटी ही, पर साथ ही सभी भक्तों के दिल की दुआ भी ली।

प.पू. गुरुजी को देख कर हर एक को सेवा करने का–भक्ति अदा करने का दिल अपने आप ही हो रहा था... आज 66 वर्ष की आयु में कभी पीछे समाधि स्थल पर शिलालेख का कार्य देखने, कभी ठाकुरजी के हॉल में प्रदर्शनी का कार्य एवं रंगोली देखने, तो कभी पीछे स्टेज का कार्य देखने वे दिन में पाँच-छः बार जाते... ऐसे आदर्श रूप प.पू. गुरुजी को राजी करने की भावना से सभी संतों ने, प.पू. दीदी के मार्गदर्शन में बहनों-भाभियों ने एवं प.भ. प्रभाकरभाई,

प.भ. राकेशभाई शाह, प.भ. कौशिकभाई, प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत, प.भ. विशाल व छोटे-छोटे बच्चों ने दिन-रात एक करके खूब जिम्मेदारी से सेवा करी।

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि– 'रसोई' की सेवा ऐसी होती है कि भक्तों को अच्छा प्रेमभरा भोजन करा कर हम प्रभु की मूर्ति हॉंसिल कर सकते हैं। प.पू. गुरुजी द्वारा बताई भावना की ओर अग्रसर होकर ही **पू. सुहृद्स्वामी** व प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विजयभाई महेता, प.भ. अजय चावलाजी, प.भ. दिलीपभाई शाह वगैरह ने सभी को भक्तिभरे दिल से समय पर एवं जिसे जैसी जरुरत थी, भोजन की वैसी ही व्यवस्था करा कर प.पू. गुरुजी को खूब निश्चिंत कर दिया।

प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी व उनके मित्र **प.भ. महेशजी** ने अल्प परिचय होने के बावजूद समय-समय पर हमें सरकारी नियमों से अवगत करा कर जो सेवा करी वह खूब सराहनीय कही जाए। साथ ही प.भ. प्रकाशभाई के परम मित्र **प.भ. रवि गुप्ताजी** जिन्हें परम पूज्य गुरुजी के प्रति अत्यधिक पूज्यभाव व लगाव है, उन्होंने अपने मामाजी द्वारा मुक्तों के ठहरने के लिए अग्रसेन धर्मशाला की जो सेवा करा दी उसके लिए खूब-खूब धन्यवाद। परम पूज्य गुरुजी के आशीर्वाद तो सभी पर ढले ही, क्योंकि परम पूज्य काकाजी की स्मृति डाक टिकट जारी होने बारे जब भी बातचीत होती, तब वे बार-बार यही कहते कि असल में हमें ख्याल नहीं है, **इस उत्सव में जो भी सेवा करेगा.... भजन करते-करते महिमा से और दिव्यभाव रख कर यदि करेंगे तो एक बहुत बड़ा पुण्य उदय हो जाएगा.....हमारा भाग्योदय हो जाएगा।**

28-29 मार्च तक तो गुणातीत समाज से जुड़े देश-विदेश के मुक्त-आत्मीय स्वजनों के आने से 'ताड़देव' की रौनक-नज़ारा देखते ही बन रहा था। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी संतों के साथ 28 तारीख को ही आ गए थे। विद्यानगर-गुणातीत ज्योत से प.पू. पप्पाजी की ओर से पू. ज्योति बहन, पू. देवी बहन व बहनें एवं इलेशभाई इत्यादि आए... **ब्रह्मज्योति से पू. रतिभाई भी आए; लेकिन प.पू. साहेब की कमी सभी हरिभक्तों ने खूब महसूस करी।** सोखड़ा-हरिधाम से पू. विठ्ठलभाई (फूआ) भी इस उत्सव के लिए विशेष रुप से आए। 29 की सुबह आश्रम एक्सप्रेस से अमदावाद मंडल आया, 29 की शाम को फ्रंटियर से पूरम पूज्य हरिभाई साहेब, पूज्य निर्मलस्वामिजी, पूज्य भरतभाई, पूज्य वशीभाई व मुंबई मंडल आया। 30 मार्च की सुबह परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी संतों के साथ आए। इसी प्रकार 29-30 मार्च तक पंजाब के मुक्त भी आ गए थे।

प.पू. दिनकरभाई की प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति व प.पू. गुरुजी के प्रति लगाव देख कर सभी के दिल नतमस्तक हो गए। प.पू. दिनकरभाई दिसंबर में 'प.पू. पप्पाजी स्वरूपदर्शन स्वर्णपर्व' के फंक्शन पर 'विद्यानगर' आए, फिर 'पवई' मूर्तिप्रतिष्ठा के अवसर पर आकर फरवरी 2003 में ही वापिस अमेरिका गए थे कि मार्च में तीसरी बार डाक टिकट विमोचन निमित्त सिर्फ दो दिन के लिए ऑफिस से किसी भी तरह छुट्टी लेकर खास दिल्ली आ गए... 29 की रात को एक बजे सीधा दिल्ली आए और 31 की अर्धरात्रि को तो यहीं से वापिस शिकागो जाने निकले। **प.पू. दिनकरभाई का यूं दो दिन के लिए इतनी दूर से आना सभी के दिल को छू गया कि– 'यह सेन्टर हमारा है'– यह केवल बोलने से ही नहीं, बल्कि यूं वर्तने से प्रतीत होता है। यह बात खूब मायने रखती है।** दिल्ली के सभी भक्तों के मुँह से धन्यवाद, धन्यवाद सहज निकल पड़ा !

वडोदरा से इस उत्सव निमित्त आए प.पू. काकाजी के भतीजे **पू. वीनुकाका** करीब एक महीने तक दिल्ली मंदिर रुके... **प.पू. काकाजी द्वारा उत्तर भारत में फैलाए सत्संग एवं प.पू. गुरुजी द्वारा खड़ा किया छोटा लेकिन ठोस आत्मबुद्धि व प्रीति से जीता एक समाज** देख कर वे बहुत ही राजी हुए। वे प.पू. काकाजी के साथ भी काफी समय तक रहे थे, उन्होंने बताया कि–

'मुझे इतने दिन प.पू. गुरुजी को खूब नज़दीक से देखने को मिला। मैंने तो प.पू. गुरुजी को 1955 से देखा है, पर अब प.पू. गुरुजी का हर एक हलन-चलन, भक्तों से बातें करना, सब कुछ प.पू. काकाजी जैसा है। ***मैं सब जगह गया हूँ, पर यहां मैंने चेइन्ज ही महसूस किया है, मुझे ऐसा लगता है कि मैं प.पू. काकाजी के सामने ही बैठा हूँ। मुकुंदस्वामी ने 'काका' को अखंड धारा है।*** *प.पू. काकाजी जैसे पूछते– जम्या ? ठीक वैसे ही प.पू. गुरुजी पूछते हैं। जो भी प.पू. गुरुजी के पास आता है, वो एकदम कन्विन्स हो जाता है।* ***रियली आई लाईक हीम, आई लव हीम।'*** *फिर यहां तक बोले कि यह मैं तुम लोगों को खुश करने या ऊपर-ऊपर से नहीं बोल रहा, बल्कि सच्चाई बोल रहा हूँ... तुम सब जरुर गुरुजी को पहचान लेना !'*

29 मार्च की रात को इन्द्रदेव भक्तों की कसौटी करने अपना साज-सामान लेकर पधारे और बहुत तेज़ बरसात हुई। प.पू. दिनकरभाई को लेने प.पू. गुरुजी एॅयरपोर्ट जा रहे थे। तब तेज बारिश

देख कर भाभियों-बहनों ने प्रार्थना भी कहलवाई कि बारिश अपने साथ ले जाइए... आश्चर्य की बात कि प.पू. गुरुजी गेट से बाहर निकले और बरसात धीमी होनी शुरु हो गई !

पाँच-दस मिनिट तो सभी एकदम ढीले हो गए... पर तुरंत 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते-करते सभी उमंग से लग पड़े... स्टेज के ऊपर का पूरा पर्दा पानी से भर गया था, सो कैंची से जगह-जगह होल करके सारा पानी निकाला। बारिश से गीले होने से बचाने के लिए सोफे व कुर्सियाँ उल्टी कर दीं थीं... सब गलीचे गीले हो गए थे। पर, सभी ने इस कसौटी को बहुत ही पोज़िटिव विचार से लिया कि– **यह बरसात 29 के बजाय 30 को होने वाली होगी। सो, प.पू. काकाजी ने आज एक दिन पहले ही भेज कर असल में हमारी खूब रक्षा करी है।** और... वाकई दूसरी शाम यानि 30 की शाम को डाक टिकट विमोचन के अवसर पर अशोकविहार को छोड़ कर दिल्ली में कई जगह बारिश हुई ! प्रभु को ही कर्ता-हर्ता मान कर हर प्रसंग पर भजन का ही बल लेने की रीति जो प.पू. गुरुजी ने हर छोटे बच्चे से लेकर बड़ों में कूट-कूट कर भरी है, वह इस प्रसंग पर देखने को मिली। छोटे बच्चों को इतने बल में देख कर हर एक को भीतर में अंतर्दृष्टि हो रही थी कि सच प.पू. गुरुजी ने कलियुग में कैसा अद्भुत सर्जन किया है। उत्सव के दो-तीन दिन बाद प.पू. गुरुजी ने इस बात का रहस्य बताते हुए कहा– **'भले यह बारिश हुई और सब अस्त-व्यस्त हो गया। दरअसल ऐसे भक्तों की सेवा देखने देवी-देवता भी इच्छुक होते हैं....'**

30 तारीख की सुबह तो सभी सेवक जोर-शोर से फिर सेवा में जुट गए और समयानुसार सब कुछ सॅट भी हो गया। मानो कुछ हुआ ही नहीं था। दूसरी ओर सभी केन्द्रों से आए मुक्तों को लेकर प.पू. गुरुजी व प.पू. दिनकरभाई ने एक छोटी-सी सभा करी। आज ताड़देव परिसर का नज़ारा अनोखा ही था। मंदिर के मुख्य द्वार पर फूलों की लड़ियों से बना भारतीय तिरंगा झंडा सड़क पर आते-जाते लोगों का ध्यान अपनी ओर सहज आकर्षित कर रहा था। परिसर के आँगन की लॉन में एक बड़े पोल पर 'साक्षात्कार स्वर्णस्मृति' का लोगो लगा था, जिसके नीचे गुणातीत समाज का झंडा लगाया था।

पिछले साल की तरह इस बार भी प.पू. काकाजी ने प्रतीति कराई कि हर जगह मैं ही तुम्हारी भावना को हाथ-पाँव दे रहा हूँ... गुणातीत समाज का झंडा बनाने के लिए कपड़ा कुछ कम पड़ा था। रात को कपड़ा लेने सेवक जब मार्किट पहुँचा, तो सारी दुकानें बंद हो चुकी थीं। सिर्फ एक ही दुकान खुली थी और आश्चर्य की बात कि जितने मीटर कपड़ा हमें चाहिए था, बस उतने मीटर ही कपड़ा उस दुकान पर था। इस बात ने स्पष्ट प्रतीति कराई कि प.पू. काकाजी ने ही हमारे लिए सारी सुविधा करके रखी थी।

लॉन के सामने ही उत्सव से संबंधित रजिस्ट्रेशन काऊंटर, सेल काऊंटर, फिलाटेली काऊंटर वगैरह बने थे। आज के उत्सव के लिए स्वयंसेवक भाईयों ने 'स्वामिनारायण' लिखित कपड़े की कमीज़ व भाभियों-लड़कियों ने हरे रंग के बेईझ की नीले बोर्डर वाली साड़ियाँ पहनी थीं। साढ़े चार बजे के करीब तो डाक विभाग के कर्मचारी मंदिर में आ चुके थे। बस, अब इंतज़ार था तो आज के विशेष अतिथि यानि– **माननीय श्री अरुण शौरीजी** जिनके द्वारा डाक टिकट जारी होनी थी। साढ़े पाँच बजे मा. श्री अरुण शौरीजी आए। स्वागत कक्ष में जलपान करके वे प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.भ. मल्कानी साहेब, गोधरा से खास इसी उत्सव निमित्त आए प.भ. शांतिभाई पटेल, प.भ. बरार साहेब तथा अन्य महानुभावों के साथ प.पू. काकाजी महाराज की जीवन झांकी पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन करने गए... प्रदर्शनी के मुख्य द्वार पर गुजरात का नक्शा बनाया हुआ था, जिसमें प.पू. काकाजी महाराज का जन्म स्थान **'करमसद'** दर्शाया हुआ था और उसके नीचे लिखा था **'धन्य धरा गुजरात की...'**

सभी ने बहनों द्वारा रात-दिन एक करके गुजराती प्रणाली से बनाए प्रदर्शनी हॉल में प्रवेश किया। प.पू. गुरुजी व प.भ. मल्कानी साहेब द्वारा प.पू. काकाजी महाराज की बहुमुखी प्रतिभा का विवरण प्राप्त करके, हॉल में बनाई गई रंगोली व ठाकुरजी का दर्शन करके मा. शौरीजी नीचे जहां प.पू. गुरुजी रोज बैठते हैं, वहां प.पू. ज्योति बहन, पू. दीदी, पू. देवी बहन व डाक विभाग की महिला अफसरों को मिलते हुए प.पू. काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर गए। यहां पर प.पू. काकाजी महाराज की परिक्रमा करने के बाद **प.पू. दिनकरभाई व प.पू. भरतभाई ने शिलालेख का उद्घाटन किया।** इसी दौरान प.पू. दीदी– प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन के साथ डाक विभाग की महिला अधिकारियों को प्रदर्शनी का दर्शन कराने ले गईं।

स्मृति स्थल से सीधे सभा स्थल में देवताओं के परिवेष में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा स्वागत प्राप्त

करते हुए सभी स्वरूपों एवं मा. शौरीजी ने प्रवेश किया...

स्टेज का पर्दा जगंराव के **आर्टिस्ट सोमनाथ कतियाल** द्वारा साक्षात्कार स्वर्णस्मृति के निमंत्रण कार्ड पर छपे चित्र का बना था, जिसमें पहाड़ दिखाए थे एवं बादलों में 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' लिखा था व वो पहाड़ों के बीच प.पू. काकाजी महाराज का अभयदान देता हाथ बनाया हुआ था। **हार्द** यही था कि आज हम जो सुरक्षित हैं, वो ना तो हिमालय की शृंखलाओं के कारण या आधुनिक उपकरणों के कारण, बल्कि **हम सुरक्षित हैं ऐसे प्रभुधारक संतों की तपस्या के कारण !**

स्टेज पर बीचोंबीच प.पू. काकाजी की प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्ति रखी थी। प.पू. पप्पाजी को इस आयु में स्थूल रूप से परिश्रम ना लेना पड़े, सो प.पू. गुरुजी ने उन्हें प्रार्थना करी थी कि वे वहीं से अपने आशीर्वाद भेजें। सो, उनकी स्मृति हेतु प.पू. काकाजी की मूर्ति के बराबर ही सोफे पर प.पू. पप्पाजी का कटआऊट रखा था।

स्वामिनारायण महामंत्र की धून से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। **भारतीय विद्या भवन के प्रोफेसर पी.जी. शुक्लाजी** द्वारा किए **वेदमंत्रोच्चार** के साथ प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी की निश्रा में **मा. श्री शौरीजी ने दीप प्रज्ज्वलित किया।** सर्वप्रथम **प.भ. विकास मल्कानी** ने निम्न मार्मिक शब्दों से सभी स्वरूपों व मा. शौरीजी का स्वागत-धन्यवाद किया–

'....आज हम सबके लिए बहुत ही महत्त्व का दिन है... ***जिस देश में स्पीरीच्युअल लीडर्स और पोलिटिकल लीडर्स हाथ मिला कर काम करें, वो देश पूरी दुनिया में प्रथम होने ही वाला है।*** *भगवान स्वामिनारायण ने हम सब के लिए जो सबसे बड़ा वरदान दिया, वो यह था कि जब तक यह देश रहेगा-समय रहेगा, एक कॉन्सटन्ट और कन्टीन्यूअस हाईरारकी-एक जीवंत हाईरारकी यहां पर रहेगी... एक और चीज़ जो कि गुणातीत परंपरा में बहुत विशेष है कि यहां पर कभी भी कोई उत्तराधिकारी को नोमिनेट नहीं किया जाता। ओटोमेटिक्ली वो सक्सेसर सामने आ जाता है, रेकग्नाईज़ हो जाता है और एक्सेप्ट हो जाता है...*

आज के इस शुभ दिन पर काकाजी की मेमरी में गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया प्रसन्नता से कोमेमोरेटिव पोस्टेज स्टेम्प रीलीज़ करने वाली है। काकाजी को तो आप सब जानते हैं ही। ***काकाजी वॉज़ धी फाऊंडर, इन्सपीरेशन एण्ड धी वॅरी लाईफ ऑफ गुणातीत समाज ! आज हम सब हमारे सामने जो भी देख रहे हैं और हम सब जो गुरुजी से जुड़े हुए हैं, जानते हैं कि इन सबके पीछे-गुरुजी के पीछे भी काकाजी ही बैठे हैं...***

...मुझे कुछ बातें गुरुजी ने बताईं जो बहुत महत्त्वपूर्ण लगीं, वो मैं आपके सामने रखता हूँ। गुरुजी जब अरुण शौरीजी को मिलने गए थे, तो वो अपने ऑफिस में बिलकुल आगे तक रीसीव करने आए और वहीं से उनको अपने साथ-साथ ले गए। गुरुजी को यह बात बहुत ही छू गई ! फिर कुछ पेपर्स दिखाने थे और गुरुजी वो गाड़ी में भूल गए थे। तो गुरुजी ने कहा कि मैं बाहर भूल आया हूँ और गुरुजी किसी सेवक को बुलाने कहें उससे पहले तो शौरीजी खुद ही सेवक को बाहर से बुला लाए ! ये जो उनकी सिम्पलीसिटी थी और जिस प्रेम से वो गुरुजी को मिले एवं वेलकम किया, वो बात गुरुजी को सच में बहुत टच कर गई ! आज हमारे साथ अरुण शौरीजी बैठे हुए हैं। आई थिंक इट इज़ ए ग्रेट ऑनर फॉर ऑल ऑफ अस धेट वी हेव हिज़ प्रेज़न्स एण्ड ओपोर्च्युनीटी टु शॅर हिज़ विज़डम...

मेरे ख्याल से हम यहां पर जो भी हज़ार-दो हज़ार आदमी बैठे होंगे, सब का गुरुजी के साथ डीप लगाव-डीप एफेक्शन है। ***गुरुजी एक ऐसी पर्सनलीटी हैं कि हम कोई भी उनको एक डेफीनेशन में या एक लेबल में या एक स्लोट में जकड़ कर बांध नहीं सकते। हर एक का यहां पर गुरुजी के साथ स्पेशियल रीलेशनशिप और एक स्पेशियल ही अंडरस्टेन्डींग है। यह रिलेशनशिप कभी भी माईन्ड का हो नहीं सकता है। हर एक का गुरुजी के साथ एक लव रिलेशनशिप है... जिस तरह से गुरुजी ने हम सबको हैल्प किया है वो हम ही जानते हैं। हर आदमी को किया हुआ है, इन डिफरेन्ट वेईझ !*** *आई एक्स्टेन्ड अवर लव एण्ड रिगार्ड फॉर गुरुजी; एण्ड मोर धेन धेट हीज़ लव फॉर अस मेक्स हीम वॉट ही इज़ ! थेंक यू वैरी मच गुरुजी...'*

तत्पश्चात् फूलों के हारों व कलगियों से सभी स्वरूपों व माननीय अतिथियों का बहुमान किया गया। सर्वप्रथम पुराने जोगी प.भ. कमलदेवजी (लुधियाना) ने प.पू. काकाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया। **मा. श्री शौरीजी** व **मा. श्री कथिरिया साहेब**–जिन्होंने स्मृति डाक टिकट के कार्य के लिए **मा. श्री काशीरामभाई राणा साहेब** की भाँति खूब परिश्रम किया–उनका भी हार व शाल अर्पण करके स्वागत किया गया। साथ ही **श्री मुक्तजीवन बापा-मणीनगर संस्था के संतश्री** जो खास इस भावना से आए थे कि यह हमारे

स्वामिनारायण संप्रदाय का गौरव है, उनका भी हार व शाल अर्पण करके स्वागत किया गया। प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन भी आज ही मनाया जा रहा था, सो सारे दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से तिरंगे झंडे के रंग का रेशम का हार **हॉलेन्ड** से खास इसी उत्सव के लिए आए **प.भ. एम.जी. बंसलजी** ने प.पू. गुरुजी को अर्पण किया। मा. शौरीजी पर प्रसन्नता दर्शाते हुए प.पू. गुरुजी ने वह रेशम का हार उन्हें पहनाया।

अल्प समय में ही हमारे आत्मीय बने **प.भ. अजीत गुप्ताजी** के द्वारा कॉन्टेक्ट में आए **श्री राकेश गुप्ताजी** ने इसी दिन यानि 30 मार्च को प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके, आशीर्वाद लेकर प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट के उत्सव की पहली रिकॉर्डिंग करके अपने नए **'साधना चैनल'** की शुरुआत करी। उनकी भावना व इस सेवा के लिए हम सभी तहेदिल से हमेशा आभारी रहेंगे और प्रार्थना है कि **इस सेवा के फलस्वरूप 'साधना चैनल' को भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूप दिन-प्रतिदिन खूब सफलता प्रदान करें** !

दूसरी ओर परम पूज्य ज्योति बहन, पूज्य देवी बहन, पू. योगिनी बहन व डाक विभाग की महिला अफसरों का हार व कलगी अर्पण करके स्वागत किया गया।

हारविधि, कलगी अर्पण के बाद वो सुनहरी मंगल घड़ी आ पहुँची जिसका सबको बेसब्री से इंतज़ार था। यानि– **प.पू. काकाजी महाराज की डाक टिकट का विमोचन** ! ठीक 6:45 बजे मा. शौरीजी ने रिमोट द्वारा ब्लोअप का अनावरण किया और 'काकाजी महाराज की जय' के उद्घोष के बीच सभी को प.पू. काकाजी की डाक टिकट का दर्शन हुआ... एक ओर गुलाब की पंखुड़ियों की भीनी-भीनी सुंगधभरी वर्षा और आँखों के हर्षाश्रु में डाक टिकट जारी हो रही थी, तो दूसरी ओर आकाश में की जा रही आतिशबाजी सभी को अनोखा प्रकाश दे रही थी। मानो महीनेभर की थकान एक क्षण में ही गायब हो गई ! **यह ऐतिहासिक पल हम सभी के लिए एक शाश्वत् स्मृति बन गई** ! डाक टिकट विमोचन करते हुए मा. शौरीजी ने एक अल्बम भी जारी किया और सर्वप्रथम अल्बम उन्होंने परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी व परम पूज्य अक्षरविहारीस्वामिजी को अर्पण किया।

डाक विमोचन दौरान ही **'कहानी घर-घर की'** सिरियल में **'पार्वती भाभी'** का किरदार निभाने वाली **साक्षी तँवर** प.पू. गुरुजी के प्रति खूब पूज्यभाव होने के कारण मुंबई से खास इस उत्सव में अपने माता-पिता के साथ आईं। एक प्रेस रिपोर्टर उन्हें इंटरव्यू देने आग्रह करने लगे, तो साक्षी ने स्पष्ट शब्दों में मना करते हुए कहा कि **आज मैं सिर्फ इस उत्सव के लिए आई हूँ। सो, आज तो दो मिनिट का भी इंटरव्यू नहीं दे पाऊंगी।**

यह बात सुन कर **प.पू. गुरुजी** ने कहा था– **इस उत्सव के लिए यूं आना साक्षी के जीवन का एक बहुत बड़ा सत्कर्म बन गया ! फलस्वरूप प.पू. काकाजी उसे जरुर किसी ना किसी रूप में अवश्य धन्य करेंगे।**

डाक टिकट विमोचन के बाद नवयुवकों ने प.पू. काकाजी महाराज के जीवन पर रचित 'रास' किया। पूरा वातावरण काकाजीमय हो गया।

प.पू. गुरुजी की यह भी इच्छा थी कि प.पू. काकाजी महाराज की डाक टिकट की स्मृति देती एक मूर्ति **'सोविनियर'** के रुप में तैयार की जाए। प.पू. गुरुजी को किसी ने बताया था कि सौराष्ट्र में ऐसी मेटालिक मूर्तियाँ बनती हैं। अमदावाद के **प.भ. उदयभाई जानी** ने जानकारी हॉसिल करी कि राजकोट में **'शिल्पा प्रोसेस'** वाले **श्री रवजीभाई** ये बहुत अच्छी बनाते हैं। इनका प.पू. गुरुजी से कोई परिचय नहीं था, पर प.पू. गुरुजी ने सिर्फ एक बार फोन पर बात करी...तो वे फोन से ही इतने अधिक प्रभावित हुए कि तुरंत ही उन्होंने वह 'सोविनियर' तैयार करवा कर भेज दिया। इतना ही नहीं, वे स्वयं भी इस उत्सव में आए ! प.पू. गुरुजी का प्रेम, सादगी, प्रतिभा व मंदिर का सारा आपसी कुटुंबभाव देख कर श्री रवजीभाई बोल उठे कि– **मैंने यहां कुछ अलग ही अपनापन महसूस किया है।**

सोविनियर उद्घाटन के बाद **मा. शौरीजी** ने सभा को संबोधित करते हुए कहा–

'हम एक बहुत ही नोबल व्यक्ति के ऑनर में एकत्रित हुए हैं... यह कई बार कहा गया है कि इंडिया में हम मूलतः बहुत धार्मिक हैं... यही एक सिविलाईज़ेशन ऐसी है जिसमें हर एक रिलीज्यन का एक ही तरह से सम्मान होता है...हमारे यहां रिलीज्यन कोई स्क्रीप्चर्स पढ़ कर नहीं अपनाता, अच्छे व्यक्तियों को देख कर वो कहते हैं कि स्वामिनारायण संप्रदाय से अगर इतने अच्छे व्यक्ति उत्पन्न होते हैं, इतने महापुरुष उत्पन्न होते हैं तो इसमें बहुत ही गुण होगा; तो मैं भी इसको अपनाऊं... इन व्यक्तियों के कारण ही कोई भी हमारे रिलीज्यन या सिविलाईज़ेशन को डिस्ट्राय नहीं कर पाया... हमें इन सबका आदर इसलिए भी करना चाहिए कि ये हमें पर्सनल गाईडेन्स देते हैं, हमें सस्टेईन करते हैं। वे ही धागा हैं जिससे हमारे सिविलाईज़ेशन का हार जुड़ा रहता है। ***मगर***

हमारे में एक अवगुण है, उसको हमेशा परे करना चाहिए। हम लोगों की मूर्तियाँ बना देते हैं, उन मूर्ति में गुण डालते हैं और बस अपने आप को उस गुण से एग्जेम्प्ट कर देते हैं कि बस मूर्ति की पूजा कर ली। वो गुण जो हम सब इन अच्छे व्यक्तियों में देखते हैं, जो हम काकाजी को स्मरण करके याद करते हैं, वो गुण हमें अपने जीवन में उतारना यही रिलीज्यन है। *तो हम ऐसा रिलीज्यन अपनाएं और ये जो स्टेम्प रीलीज़ की गई है, वो हमें इसी में योग दें कि* ***हम काकाजी जैसे इतने सादे और इतने डायनिमिक और इतने डिवोटिड लीडर और सेवक के जो गुण थे, वो हम अपने आप में उतारें। अगर हम 'चार आना' भी काकाजी जैसे बनेंगे तो देश का उद्धार होगा, हमारा उद्धार होगा।*** *आपने मुझे बुलाया तो इसके लिए मैं आपका हमेशा आभारी रहूँगा।'*

मा. अरुण शौरीजी की ख़ानदानी, संतों के प्रति की उच्च आदर भावना, विनम्रता, भक्तिभाव सभी के हृदय को स्पर्श कर गई। **मंदिर के परिसर में प्रवेश होने से लेकर वापिस जाने तक यानि पूरे ढाई घंटे तक वे हाथ जोड़ कर ही रहे।** अपने ओहदे का गरुर उन्हें छू ही ना पाया हो ऐसा सभी ने महसूस किया। प.पू. गुरुजी डाक टिकट के संदर्भ में उन्हें मिलने जब ऑफिस गए थे तब भी प.पू. गुरुजी के साथ गए मुक्तों ने वापिस आकर बताया था कि जितनी देर प.पू. गुरुजी वहां रहे शौरी साहेब अपनी कुर्सी पर ना बैठ कर खड़े ही रहे। **दिल की सच्चाई से हुआ ऐसा जेस्चर व्यक्तित्व का संपूर्ण परिचय अपने आप दे देता है।**

माननीय शौरीजी को समय के अभाव के कारण जल्दी लौटना था, सो प.भ. राकेशभाई ने प.पू. स्वामिजी को आशिष प्रदान करने प्रार्थना करी। पंडित जवाहरलाल नेहरुजी का एक प्रसंग बताते हुए **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** उनके आशीवर्चन में बोले कि–

'जवाहरलाल नेहरुजी ने एक बार सरदार पटेल को पूछा कि आप कभी भी क्रोधित नहीं होते, मुझे तो छोटी-छोटी बात पर गुस्सा आ जाता है। उसका क्या कारण ? सरदार पटेल ने जवाब दिया था कि मेरे सिर पर दो जनों का हाथ है–एक मेरे समर्थ गुरु शास्त्रीजी महाराज, दूसरी–मेरी माँ जो कि मोस्ट रीलिजीयस माईन्डिड थी। ये दोनों पवित्र व्यक्तियों का हाथ मेरे सिर पर है... मुझे आशीर्वाद मिला है। फलस्वरूप मेरा दिमाग कभी क्रोधायमान होता नहीं है.... काकाजी के गुरु शास्त्रीजी महाराज थे। काकाजी जब छोटे थे तब योगीजी महाराज के गुरु शास्त्रीजी महाराज के योग में आ गए थे। काकाजी एक अद्‌भुत पुरुष ! शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज का वो सेवक–'काकाजी' एक सिंह जैसे पुरुष थे...

जब 1952 में नंदाजी का इलेक्शन आ गया... योगीजी महाराज ने काकाजी को पत्र लिखा कि दादुभाई ! नंदाजी इलेक्शन में खड़े हुए हैं, आप अपने मित्र मंडल सहित गाड़ियाँ लेकर साबरकांठा के इलेक्शन में दो-तीन महीने के लिए पहुँच जाओ। काकाजी शूरवीर थे, काकाजी व्यवहार कुशल थे, काकाजी एक अदम्य गुरुभक्त थे। काकाजी के जीवन में एक ही दृढ़ ठहराव था– 'आप राजी हो जाओ, मेरा जीवन धन्य हो जाए।' योगीजी महाराज की प्रसन्नता पाने के लिए काकाजी साबरकांठा इलेक्शन में पहुँच गए...इलेक्शन पूरा हुआ। इलेक्शन में जाना और ढाई महीने वहां रहना कठिन तपस्या थी। मगर काकाजी के हृदय में गुरुभक्ति थी-प्रभुभक्ति थी। स्वामिजी किसी भी तरह राजी होने ही चाहिए। काकाजी के हृदय में गुरु का स्थान प्रथम था। फलस्वरूप वे अद्‌भुत भक्ति से इलेक्शन लड़े। योगीजी महाराज के आशीर्वाद के फलस्वरूप नंदाजी इलेक्शन में जीत गए...

...... आत्मा गंदगी में गिरा हुआ है, पड़ा हुआ है। हमारी आत्मा काम, क्रोध, ईर्ष्या, मान वगैरह, विविध प्रकार के दूषण युक्त हैं। वो सभी दूषणों से मुक्त होने के लिए निर्दोष पुरुष आवश्यक है। जिसके हृदय में भगवान स्वामिनारायण निरंतर रहते हैं, जिसकी आँख में प्रभु देखते हैं, जिसके पैरों में प्रभु चलते हैं, जिसके कान से प्रभु सुनते हैं, जिसके द्वारा प्रभु काम करते हैं... योगीजी महाराज ऐसे संत थे। उनके हृदय में भगवान स्वामिनारायण सांगोपांग वासित थे। भगवान स्वामिनारायण की प्रणालिका में योगीजी महाराज चौथे वारिसदार थे। योगीजी महाराज ने काकाजी को गोंडल बुलाया और घनश्याम महाराज की मूर्ति के पास ले गए। घनश्याम महाराज को योगीजी महाराज ने प्रार्थना करी– हे भगवान स्वामिनारायण ! हे घनश्याम महाराज ! हमारे दादुभाई इडरिया गढ़ जीत कर आया है, बड़ी सेवा करके आया है। हमें बहुत राजी कर लिया है। आज आठ आवरण के पार, प्रकृति-पुरुष के पार का वो भयंकर गढ़ में से मुक्त करके उन्हें आपकी मूर्ति का सुख दो। जब योगीजी महाराज ने यह प्रार्थना करी, तो वो मूर्ति की आँखों में से इतना अद्‌भुत तेज निकला, इतनी अद्‌भुत दिव्य ज्योति निकली, जिससे पू. काकाजी को एक अद्‌भुत समाधि का, प्रभु की मूर्ति का सुख मिला। 72 घंटे तक वो समाधि में

रहे। बापा ने अद्भुत आशीर्वाद दे दिए... ***बापा ने हम सब के लिए यह अद्भुत स्वरूप पृथ्वी पर रख दिया।*** *योगीजी महाराज को राजी करने के लिए फिर काकाजी ने चार प्रकार के समाज का अद्भुत स्थापन किया...*

...दिल्ली की इस धरती पर एक गुरुजी जैसे सच्चे साधु का निर्माण हुआ ! ***शौरी साहेब को मैं ये कहता हूँ कि गुरुजी को मिलने के लिए जरुर आते रहना।*** *संतों को कोई स्वार्थ नहीं है, कोई अपेक्षा नहीं है। एक ही उद्यम होता है कि मानव आत्मा की सेवा हो जाए। मानव आत्मा माया के प्रभाव से मुक्त हो जाए। मानव समाज सुखी हो जाए। आज के कलियुग में जो युवा समाज खत्म हो रहा है, उसकी रक्षा हो जाए। इसलिए काकाजी ने एक संकल्प करके गुरुजी को यहां बिठाया। अद्भुत साधु है ! दिल्ली की धरती पर बहुत अद्भुत काम कर रहा है... आज के शुभ मंगलकारी दिन - गुरुजी के प्रागट्य दिन पर हम जब इक्टठे हुए हैं तब भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, स्वामिजी सब के चरणार्विंद में यही प्रार्थना –*

सभी का संबंध गुरुजी के साथ, योगीजी महाराज के साथ, काकाजी के साथ बढ़ता ही रहे, बढ़ता ही रहे और हम सब सर्वांगी सुखी हो जाएं !'

तत्पश्चात् समय का अभाव होने के कारण मा. शौरीजी ने विदाई लेनी चाही। उनके भाव को देखते हुए **प.पू. गुरुजी** ने विदाई देते समय उन्हें अपनी माला दी... शौरीजी वह माला लेते हुए खूब ही भावविभोर हो गए और बोले कि– **एक माला मुझे मेरी माँ ने कई वर्षों पहले दी थी और यह दूसरी माला मुझे आपने दी।** प.भ. राकेशभाई ने उस समय बहुत ही मार्मिक उद्गार कहे कि– **ऐसे संत जो कि प्रभु रखते हैं वो देंगे भी तो प्रभु ही देते हैं; उसी के प्रतीक रूप प.पू. गुरुजी ने शौरी साहेब को माला भेंट दी है।** सभी स्वरूपों व महानुभावों से मिलते हुए मा. शौरीजी ने महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

और फिर शुरु हुई प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन की सभा ! सभा की शुरुआत में **प.पू. दिनकरभाई** ने प.पू. काकाजी के स्मारक डाक टिकट विमोचन के बारे संबोधित किया– *'आज हिन्दुस्तान की मध्य में दिल्ली से हम सब जो ये पवित्र स्मृतियाँ लेकर जाने वाले हैं– जो हमारे लिए चिरंजीवी बनने वाली हैं, उसका ये प्रसंग है। हमारे दिल में काकाजी ऐसे बैठ गए हैं, उसका आज ये अद्भुत प्रदर्शन है....हमारे प्रगति के जो भी मार्क्स हैं वो सब ये गुणातीत पुरुषों के परिश्रम के आधारित हैं। वो नहीं होते, हम ज़ीरो हो जाते। वो हैं तो वो जहां तक ले जाएं उधर तक हमारी कीमत पहुँच सकती है...*

काकाजी ऐसी विभूति हो गए जो हमारे जैसे होकर हमारे लिए हमारे प्रारब्ध को और दुःखों को अपने सिर पर लेकर हम को अति सुखी कर दिया। ***काकाजी की आज जो स्टेम्प निकली, वह सारे हिन्दुस्तान में पहुँचेगी इतना ही नहीं है, सारी दुनिया में पहुँचेगी; इतना भी नहीं है, मगर वो अक्षरधाम में पहुँचेगी और ये स्टेम्प जिसके भी दिल में बैठेगी, उसका अंतिम जन्म हो जाए...*** *ऐसी हम आज स्वामिजी, गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं। जो भी इधर आए हैं– काकाजी जैसे कहते थे– 'आप इधर आ गए, बस आपका काम पूरा हो गया।'*

.....काकाजी ने अपने पास जो चालीस हजार रुपये थे– अपने बिज़नेस के लिए लाए थे, वो शास्त्रीजी महाराज ने जब मांगे, तो दे दिए और दूसरी ही मिनिट में शास्त्रीजी महाराज ने आशीर्वाद दिया कि दादु तू मांग, जो मांगोगे वो मैं दे दूंगा। ***देखो, एक तरफ मांगते हैं, तो दूसरी तरफ देते भी हैं और*** *शास्त्रीजी महाराज ने जब ऐसा बोला तो* ***काकाजी ने उस टाईम ऐसा नहीं सोचा कि ये तो मेरे पास मांगने वाले हैं, मुझे क्या देंगे ?*** *वो तो यही मानते थे कि गुरुजी सब आपका है, आपको देता हूँ। मगर शास्त्रीजी महाराज ने जब कहा कि मांग; तो उन्होंने कहा कि आप मेरे हृदय में बैठ जाओ! देखो, कोई भौतिक चीज़ नहीं मांगी... तो ये हमें भी मांगना है।* ***हमें क्या मांगना है वो भी काकाजी सिखा रहे हैं*** *और आज गुरुजी ने बहुत मेहनत करके ये काकाजी का स्टेम्प का सारा प्रसंग तैयार किया। गुरुजी बोलते हैं मैंने कुछ नहीं किया। गुरुजी बोलते हैं कि मुझे हर प्रसंग पर लगता है कि काकाजी ने किया है। मगर वो गुरुजी का बड़प्पन है। काकाजी ने गुरुजी को निमित्त बनाया है।* ***आज से ग्यारह साल पहले योगीजी महाराज की स्टेम्प निकली थी। ये दूसरी स्टेम्प आज हमारे गुणातीत समाज में काकाजी की निकली है वो भी बड़ी चमत्कारी बात है और न जाने कितने जनों को चमत्कार में फायदा हो जाएगा।*** *जो भी उनके बारे में कुछ समझेगा-भजन करेगा उसका काम हो जाएगा। काकाजी ऐसे बड़े पुरुष हैं... इतने बड़े होते हुए भी काकाजी बहुत नम्र से भी नम्र, विनम्र से भी विनम्र रहे...*

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा था कि– 'जैसे मछली है वो पानी में रहती है, पानी उसका जीवन है। वैसे हम भले ही सब क्रिया करते हैं, प्रभु हमारा

जीवन है, प्रभु हमारा माध्यम है।' हम भी आज ऐसे माध्यम वाले गुणातीत संतों के पास बैठे हैं। हम उनके गुण गाएंगे, तो वो हमें उसी कक्षा पर ले जाएंगे।'

तत्पश्चात् प.पू. काकाजी द्वारा हमें दिए आध्यात्म ज्ञान पर आधारित **प.पू. दीदी व प.भ. राकेशभाई ने बनाया भजन 'हे काकाजी गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर...' श्री दीपक कुमारजी ने गाया।**

भजन के बाद **प.पू. वशीभाई** ने माहात्म्यगान करते हुए कहा–

'कुछ कमाल नहीं करे तो वो गुरुजी नहीं... *गुरुजी ने ये स्टेम्प निकलवाई और आज का ये दिव्य वातावरण, दिव्य सभा, दिव्य अक्षरधाम खड़ा कर दिया... तो* ***ये काकाजी ने गुरुजी की मूर्ति कैसी बनाई है !*** *गुणातीतानंदस्वामी का एक प्रसंग है कि जब आप बड़े पुरुष को राजी कर लेते हो, तो वो क्या कर सकते हैं ! जूनागढ़ मंदिर में धर्मशाला का कुछ कन्स्ट्रकशन करना था... गुणातीतानंदस्वामी ढूंढ रहे थे कि कैसे किया जाए ? वहां जो साधु थे उसमें कोई कारपेन्टर या मेसेनरी–ऐसे भी थे। उनको पूछा, लेकिन कुछ जमा नहीं। तब एक ऑर्डिनरी सवजी मिस्त्री करके आया और उसने बोला कि स्वामी मैं कर देता हूँ। तो स्वामी इतने खुश हो गए कि उसके गले लगे। तब वे साधु में से एक ने कहा कि यह तो मैं भी कर देता हूँ। तो स्वामी बोले कि वो मौज तो अब सवजी ले गया ! ऐसे ही1969 में योगीजी महाराज तो वहां थे और काकाजी यहां थे फिर भी योगी बापा का संकल्प काकाजी ने पकड़ा और कहा कि दिल्ली में मंदिर करना है। अभी तो बोलना बहुत इज़ी है, पर आज से 30-35 साल पहले, जब यहां स्वामिनारायण का नाम लेना– स्वामिनारायण का सत्संग करना, वो एक इम्पोसिबल जैसा लगे। तब गुरुजी को काकाजी के प्रति ऐसा लगाव–काकाजी के प्रति ऐसी प्रीति कि हाँ कर दी और कितना भव्य काम हुआ, वो तो आप सब देख रहे हैं। दिल्ली के ए-103 के छोटे मंदिर से लेकर इतना बड़ा मंदिर ! काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, काकाजी की स्टेम्प और पंजाब में जगरांव, सवद्दी वगैरह जगह में काकाजी का इतना नाम कर देना– वो मूर्ति घढ़ दी काकाजी ने ! और आज गुरुजी भी ऐसी मूर्ति घढ़ रहे हैं। अभी ये युवक देखे–जो रास कर रहे थे। वो यंग हैं, उनकी एग्ज़ाम है, कोई पढ़ रहा है। पर इतना लगाव, इतना प्यार, इतना अपनापन गुरुजी ने उनको दिया होगा कि सब छोड़ कर–सब अपना याहोम करके ये सेवा में लग पड़े हैं। यह बहुत मुश्किल है कि युवक लोग मंदिर में आए। मंदिर में तो बूढ़े-बूढ़े जाते हैं, कोई युवक को देखना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन यहां सब यूथ ही यूथ नज़र आते हैं। तो, वो गुरुजी ने चमत्कार कर दिया। ऐसा ही चमत्कार गृहस्थों में भी कर दिया कि जब भी कोई जरुरत पड़ी, इन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर करने में कोई कसर नहीं रखी। इतना समर्पण, इतनी भावना! यह भावना ऐसे ही पैदा नहीं होती... समाज को अपना बनाना – सिर्फ बनाना नहीं, भगवान में जोड़ना वह भगवान स्वामिनारायण की फिलोसोफी है कि 'अक्षररूप करके, ब्रह्मरुप करके परब्रह्म में जोड़ना।' ऐसा साफ-सुथरा समाज तैयार करना वह सचमुच गुरुजी ने काकाजी का काम किया है। पप्पाजी को जब भी हम मिलते हैं, तो पप्पाजी याद करते हैं कि दिल्ली में मुकुंदजीवन ने काका का नाम अमर किया, काका का नाम रोशन किया-काका को अखंड रखा। खूब खुश होते हैं और खूब आशीर्वाद देते हैं...*

गुरुजी का काकाजी के साथ ऐसा संबंध है, उन्होंने काकाजी को जीवित रखा है, अपने कण-कण में रखा है, अपने नस-नस में रखा है, अपने रोम-रोम में रखा है... तो आज अच्छे दिन गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है कि आपकी, दिनकरभाई की, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब सब के अंतर की जो भावना है, वो हम हमारे जीवन में उतारें और जो अरुण शौरीजी ने इशारा दिया कि ***यू लिव काकाजी, डोन्ट स्पीक काकाजी... ऐसा सौ प्रतिशत काकाजी के मुताबिक जीने का हम गोल रखें वो ही प्रार्थना !'***

तत्पश्चात् **प.भ. मल्कानी साहेब** ने माहात्मय लाभ देते हुए कहा–

'....12-15 साल से हम प.पू. गुरुजी के साथ रहे हैं। ***ऐसा महसूस होता है कि भगवाधारी साधु हैं, मगर 400-500 परिवारों की वो माँ भी हैं और वे पिता भी हैं...***

....काफी समय पहले मैं गुरुजी को पूछता था कि काकाजी मिलेंगे ? काकाजी से बात हो सकेगी ? प.पू. गुरुजी ने कहा– हाँ हो सकेगी। आज मैं देखता हूँ-देखता ही नहीं, बल्कि महसूस करता हूँ कि पप्पाजी मिलें, स्वामिजी मिलें, गुरुजी मिलें–ऐसा ही लगता है कि काकाजी के साथ बात हो रही है। ***मन में ऐसा एहसास होना– वह तो केवल ऐसे प्रभुधारक संत की कृपा से हो सकता है।*** *गुरुजी की हमारे परिवारों पर बहुत कृपा हुई है। आजकल के दिनों में मेरे पोते सुबह प.पू. गुरुजी से फोन पर 'जय स्वामिनारायण' करके-धून्य करके स्कूल जाते हैं। यह देख कर बहुत आनंद आता है।*

आज प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्णजयंती पर निकली प.पू. काकाजी की स्टेम्प बारे में दिल से मानता हूँ कि ***यह केवल एक गुरुजी ही करवा सकते हैं।***

गुरुजी ने कितनी मेहनत से, कितने दिल से यह सारा कार्य किया है वह मैं जानता हूँ । गुरुजी ने पूरा अपना दिमाग, शरीर, आत्मा का मानो एक यूनियन बनाया ! उनके मन में एक ही भावना थी– वह थी आध्यात्मिक संतुष्टि। अपने गुरु– प.पू. काकाजी की आध्यात्मिक सेवा ! ***यह आसान काम नहीं हुआ है।*** *कई सालों से देखते आए हैं–काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, यह मंदिर और अभी यह स्टेम्प ! गुरुजी की एक ही भावना रही है कि अपने गुरु को राजी कर सकें–गुरुभक्ति !*

... उनका एक ही निशान था कि किसी भी तरह कैसे भी प.पू. काकाजी की यह स्टेम्प रीलीज़ होनी ही चाहिए। धेट इज़ हिज़ ग्रेटेस्ट गुरुभक्ति ! वी मस्ट ऑल थेंक्स गुरुजी एण्ड फॉलो हीज़ एग्ज़ाम्पल। एक थेंक्स वाली बात तो अलग हो जाती है, बट वी मस्ट फॉलो हिज़ एग्ज़ाम्पल ऑफ अनफाल्टरींग ! बिलकुल, अपनी गुरुभक्ति से थोड़ा भी हिले नहीं हैं।

सो, हमारे समक्ष ऐसा उदाहरण रखने के लिए धन्यवाद है प.पू. गुरुजी को। हम पर कृपा करें, हमें मार्गदर्शन दें और ***आपकी ही तरह हम सहनशील बनें जैसे आप हमेशा रहते हैं।*** *धन्यवाद और जय स्वामिनारायण !'*

तत्पश्चात् पू. इलेशभाई व मंडल ने मुंबई-ताड़देव मंडल की ओर से **प.भ. हेमंतभाई मर्चंट** द्वारा रचित भजन प्रस्तुत किया। इस भजन की विशेषता यह थी कि शब्दों की कला से सभी गुणातीत स्वरूपों, सेवकों और स्मारक डाक टिकट जारी करने के कार्य में जिन जिन्होंने सहयोग दिया उन सभी के नामों का समावेश था।

मुंबई मंडल के भजन के बाद **पू. दासस्वामिजी** ने माहात्मय दर्शन कराते कहा–

'...आज प्रवचन नहीं, बल्कि गुणातीत स्वरूपों के जीवन, चरित्र, अनुवृत्ति, आदेश और दिव्य संस्मरण को याद करते-करते उनको हमारे जीवन में आत्मसात् करने का यह अवसर है और उन दिव्य पुरुषों ने– शास्त्रीजी महाराज से लेकर योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और ***खास करके दिल्ली-पंजाब और नॉर्धन इंडिया के लिए गुरुजी ने हमें ग्रहण करके, हमें जो सुख, शांति, आनंद, दिव्यता और जीतेजी अक्षरधाम की अनुभूति प्रदान की है, वो याद करते-करते आनंद मनाने का अवसर है आज...***

...जैसे गुणातीतानंदस्वामी ने स्वामिनारायण भगवान की प्रसिद्धि की, जैसे योगीबापा ने शास्त्रीजी महाराज की प्रसिद्धि की और जैसे स्वामिजी, महंतस्वामिजी, प्रमुखस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, भाई, काकाजी और पप्पाजी ने योगीजी महाराज की प्रसिद्धि की वैसे गुरुजी, दिनकरभाई, कोठारीस्वामी, भरतभाई, बापु– ताड़देव के सभी भाईयों और यहां के सभी संतों ने काकाजी की प्रसिद्धि की... आज के दिन हम योगीबापा के चरणों में, काकाजी महाराज के चरणों में यही प्रार्थना करेंगे कि आपके और हमारे सब के लाड़ले गुरुजी का स्वास्थ्य कम से कम पूरे 100 वर्ष तक तो बहुत अच्छा रहे और ऐसी सच्ची आध्यात्मिक प्रसिद्धि के लिए वो श्रेष्ठ निमित्त बनते रहें और ***जैसे कि स्वामिजी महाराज ने कहा हम उनके समागम का लाभ लें, उनके साथ ऐसा संबंध बनाएं*** *जैसे उन्होंने योगीबापा और काकाजी के साथ संबंध बनाया, सभी गुणातीत स्वरूपों के साथ संबंध बनाया और रोम-रोम में एक 'भुलकुं' की भावना से, गुणातीत भावना से, एक अमरत्व की भावना से, एक सच्ची पहचान से, सच्चे मानस पुत्र की भावना से वे जो जी रहे हैं, वैसे हम भी योगीबापा और सभी गुणातीत स्वरूपों की हमारे रोम-रोम से, पल-पल के जीवन से जीकर प्रसिद्धि कर सकें यही उनके मंगलमय चरणों में प्रार्थना सह जय स्वामिनारायण !'*

और... इसके बाद श्री दीपक कुमारजी ने प.पू. गुरुजी के प्रागट्य निमित्त बनाया गया भजन **'काकाजी को साक्षात् प्रगटाया है...'** प्रस्तुत किया।

भजन के बाद **प.पू. हरिभाई** साहेब ने आशिष देते हुए कहा–

'... दिल्ली वाले बहुत भाग्यशाली हैं। काकाजी ने गुरुजी जैसे भगवानधारक संत को यहां भेजा ! काकाजी ने गुरुजी पर करुणा नहीं, अनुग्रह किया कि वे उनको सांगोपांग धारण कर सकें और दूसरे हरिभक्तों पर वो अपना अनुग्रह कर सकें। आज हम देखते हैं कि कई हरिभक्त कुटुंब सहित गुरुजी की निश्रा में आनंद करते हैं और गुरुजी सब के लेवल पर जाकर उनका समाधान देते हैं। ***काकाजी की जो टेक्नीक थी वैसे ही भक्तों को संभालते हैं...'***

स्वरूपों के आशीर्वाद की मानो आज तो झड़ी जैसी ही लगी थी। तत्पश्चात् **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशिष प्रदान करते हुए कहा–

'...पप्पाजी हमेशा कहते हैं कि गुरुजी ने काकाजी का काम सब संभाल लिया और काकाजी को प्रगट करके उनका जो संकल्प था मंदिर बनाने का वो मंदिर बनाया। मगर इससे बड़ी बात तो यह है कि मंदिर के साथ-साथ जैसे मल्कानीजी ने बताया कि पाँच सौ ऐसे कुटुंब हैं जिनके जीवन में गुरुजी

का प्राधान्य है और गुरुजी की आज्ञा से सब काम करते हैं। पप्पाजी हमेशा कहते हैं कि घर को मंदिर बनाओ और अपने आपको मंदिर बनाओ। घर मंदिर बने और उसमें मूर्ति की प्रतिष्ठा हो और उसके साथ-साथ अपना तंत्र जो है, वो भी मंदिर बने और उसमें काकाजी की, पप्पाजी की और दिव्य स्वरूपों की मूर्ति हम बिठाएं– ऐसा काकाजी का भगीरथ कार्य–गुरुजी ने बहुत ज़हमत उठा कर खूब मेहनत करके, बहुत भजन करके संभाला है। उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद... ये जो कार्य हुआ है, बहुत ही अद्‌भुत-चमत्कारी कार्य है।

काकाजी की ये स्टेम्प सब जगह पर जाएगी, हिन्दुस्तान में भी-परदेश में भी जाएगी। स्टेम्प के दर्शन करके जिसके मन में उनके प्रति भाव होगा उनका कल्याण होगा। ऐसी यह कल्याण योजना है। दादर मंदिर में हम रहते थे वहां घड़ी का टावर बनाया था। तो बापा ने बोला– ये ट्रेन में से जो भी आएगा-जाएगा और टावर का दर्शन करेगा उनका कल्याण होगा। कल्याण योजना का ऐसा भगीरथ कार्य मुकुंदजीवनस्वामी-गुरुजी ने बहुत ज़हमत उठा कर किया है....

असल में काकाजी के वारिसदार बन कर गुणातीत स्वरूप होकर यहां पर बहुत अच्छा डेवलपमेंट किया है। यहां पर काम करना बहुत कठिन है... और ये गुणातीत ज्ञान की यहां शुरुआत करना, ऐसे गुणातीत समाज का निर्माण करना ये बहुत ही कठिन बात है... फिर भी जब काकाजी और पप्पाजी-स्वामिजी जैसे दिव्य स्वरूपों के आशीर्वाद होते हैं, उनका संकल्प होता है तो हमें तो निमित्त बनना है। कार्य तो उनका संकल्प करता है तो वो संकल्प से इतना अच्छा बढ़िया काम हुआ है। गुरुजी के जन्म दिन पर उनके चरणों में, ऐसे दिव्य स्वरूपों के चरणों में आज प्रार्थना कि योगीजी महाराज का जो संकल्प है वो हमारे सब के जीवन में साकार बने और ऐसा ऋण अदा करने का चान्स हमारे जीवन में हमें भी मिले और हम भी ऐसे काम कर सकें यही एक तमन्ना और भावना है...'

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी द्वारा आशिष प्राप्त करने के बाद प.भ. राकेशभाई ने पंचगीनी से **प.पू. पप्पाजी** द्वारा आए आशिष पढ़ कर सभी को उनकी हाज़िरी महसूस करा दी....

30.3.03

स्वामिश्रीजी

सदा दिव्य साकार मुकुंदजीवनदास और दिल्ली मंडल एवं गुणातीत समाज के सभी अक्षरमुक्तों–
आज आप सभी इकट्‌ठे होंगे और प.पू. काकाजी के साक्षात्कार स्वर्ण पर्व के स्मृति चिन्ह रुप में
भारत सरकार अक्षरतीर्थ में प.पू. काकाजी की एक स्टेम्प जारी कर रही है। तो खूब आनंद की बात है।
नडियाद वाले पू. दादा कहते–
'दादु तो दिल्ली की गद्दी पर बैठे ऐसा है।' *वह राज्य ने–सरकार ने कबूल किया।*
पू. काकाजी की शूरवीरता और समर्पण भारत के हर एक व्यक्ति को मान्य हो
ऐसे दिल्ली की गद्दी के बादशाह बने ऐसे मुक्तों को गढ़ने वाले काकाजी हैं।
आज पू. मुकुंदजीवनस्वामी उनके मानस पुत्र के रूप में उनका कार्य कर रहे हैं और गुणातीत साधुता का प्रकाश फैला रहे हैं और
साधु मुकुंदजीवनदास के दिल्ली जाते हुए सांकरदा में मैंने कहा था कि
मुकुंदजीवनदास सारे भारत में डंका बजाएगा– वह सच हुआ। हम बहुत खुश हुए।
आज गुरुजी का जन्मदिन है और उनकी– काकाजी के नाम की टिकट जारी करी है, तो जन्मदिन तो सफल हुआ।
पू. काकाजी, पू. सोनाबा स्वयं - दोनों अक्षरधाम में खुश हो रहे होंगे।
मुकुंदजीवनदास-दिनकरभाई और भरतभाई एण्ड कंपनी काकाजी की खूब शोभा बढ़ा रहे हैं। तो धन्यवाद !
मैं आना चाहूँ तो भी आ सकूँ ऐसा नहीं है, तो माफ करना।
महापूजा में तुम्हें-मुकुंदजीवनदास, भरतभाई एण्ड कंपनी को याद करूंगा।
दिनकरभाई को जय स्वामिनारायण कहना !
मेरे बहुत आशीर्वाद हैं। सौ वर्ष तक तंदुरस्त रह कर पू. काकाजी का काम करो। सो, आनंद है।
पू. मुकुंदजीवनदास- भरत एण्ड कंपनी-मुबंई पू. काकाजी का डंका बजा रहे हैं। खूब आनंद है।
मैं हमेश वहां आऊंगा तब सोने में सुगंध मिलेगी (सोने पे सुहागा होगा)।

आशिष वांचन के बाद प.पू. गुरुजी के प्रागट्य दिन निमित्त सभी की भावनाएं व्यक्त करने हार अर्पण, भेंट अर्पण का कार्यक्रम शुरु हुआ...

दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से **प.भ. पुनीतजी (पानीपत)** ने हार अर्पण किया।

दिल्ली की बहनों व भाभियों की ओर से चाबी वाला सांकेतिक हार **प.भ. प्रमीतभाई संघवी** ने अर्पण किया, जिसके पीछे की भावना यह थी कि–

'प.पू. काकाजी हमेशा कहते कि मैं तो लुहार हूँ और तुम्हें चाबियाँ बना-बना कर देता रहा हूँ,
लेकिन तुम खो देते हो।
और सच,
अब तक हमने नादानी में कहो, लापरवाही में, अपने स्वभाव-प्रकृति के आवेश में सुहृद्‌भाव, निर्दोषबुद्धि, दिव्यभाव, अभाव नहीं लेना, आत्मीयता व मैत्री करनी, जोड़ में रहना –ऐसी कई कितनी चाबियाँ गवां दी-नज़रअंदाज कर दीं। तो, अब तो हम उनके बताए सिद्धांतों पर चलने अग्रसर हों !'

दिल्ली **संतमंडल** ने 66 अलग-अलग फूलों का हार इस भावना से अर्पण किया कि–

हम सब अलग-अलग फूल थे, यानि– अलग-अलग स्वभाव व प्रकृति से युक्त हम थे। लेकिन आपके लगाव से माला में गुंथे गए और यहां के गुणातीत समाज के सदस्य बने !

साथ ही संतमंडल ने प.पू. काकाजी महाराज की 66 विभिन्न मुद्राओं का एक कार्ड भी अर्पण किया।

मुंबई मंडल की ओर से **प.पू. भरतभाई** ने हार अर्पण किया और **पू. महेन्द्र बापु** ने भुल्कों वाला सुंदर कार्ड अर्पण करके उस पर लिखी प्रार्थना पढ़ी–

हे प्यारे गुरुजी - जय स्वामिनारायण !
आज आपका प्रागट्य दिन !
हम सब के लिए तो परम आनंद का अवसर है।
अक्षरधाम से अवनी ऊपर पधारे दिव्य गुणातीत पुरुषों आपको अपने साथ लाए।
सिर्फ भगवान भजने के लिए ही नहीं,
किन्तु अनंत को भजवाने के लिए...
आध्यात्मिक साज से सजाने के लिए,
भक्ति के रंग से सबको रंगने के लिए !
वह आपने आपके स्वयं के जीवन से
गुरुभक्ति का अद्‌भुत दर्शन कराया।
आपने प्रभु को केवल धारे ही नहीं,
उन्हें व्यापक किया और प्रगटाए भी !
आपने ही–
दिल्ली में सबसे प्रथम मंदिर बना कर
अक्षरपुरुषोत्तम महाराज पधराए;
साथ ही शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज
और
सर्वप्रथम काकाजी महाराज की संगमर्मर की
लाईव साईज मूर्ति स्थापित की।
और
राजधानी दिल्ली में 'स्वामिनारायण मार्ग' एवं 'काकाजी लेन' नामाभिधान भी सर्वप्रथम आपने करवाया
और आज के दिन
काकाजी महाराज की स्मारक डाक टिकट जारी करवा कर
उन्हें राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया !
सबसे अधिक तो–
जो-जो आपके संबंध में आए, उन सभी को
प्रभु की व काकाजी की निष्ठा
एवं
प्रगट संत के समागम से धन्य किया।
एक दिव्य आत्मीय समाज तैयार किया और आज भी कर रहे हो। तो आज के मंगल दिन के अवसर पर
इन गमलों में बैठे भुलकों की भांति इस धरती के उपवन में
आप जैसे रखवाले और माता-पिता के संबंध से
काकाजी को जो अत्यंत प्रिय था, वह–
सच्ची साधुता, संबंध वालों में आत्मीयता और समग्र गुणातीत समाज में सच्ची भावात्मक एकता हम सब के रोम-रोम में अंकुरित हो-नवपल्लवित हो और एक बड़ा वटवृक्ष बने ऐसी आशिष बरसाने की कृपा करना।
आपके ***ताड़देव मंडल के भुलकों*** *के*
प्रणामपूर्वक हार्दिक ***जय स्वामिनारायण*** *!*

गुणातीत ज्योत की ओर से **पू. इलेशभाई** ने हार व पू. यशवंतभाई दवे एवं पू. महेन्द्रभाई शाह ने विशेष भेंट अर्पण करी जिसमें प.पू. काकाजी के 51 विभिन्न मुद्राओं वाली मूर्तियाँ लगी थीं और मध्य में गोंडल के घनश्याम महाराज की मूर्ति थी, जिसके समक्ष प.पू. काकाजी को साक्षात्कार हुआ था।

ब्रह्मज्योति-अनुपम मिशन की ओर से **पू. रतिभाई** ने,
अमदावाद मंडल की ओर से **प.भ. एन.जी. पटेल साहेब** ने,
सोखड़ा संतमंडल की ओर से

धन्य धरा गुजरात की....

' रंगोली ' में भरा उन्हें,
जिन्होंने हमें अपने ही रंग मे रंग दिया !

सभा मंडप में प्रवेश करते प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी, माननीय श्री अरुण शौरीजी व अन्य भक्त...

प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी की निश्रा में दीप प्रज्ज्वलित करते माननीय श्री अरुण शौरीजी

बापा ने हम सब के लिए यह अद्भुत स्वरूप पृथ्वी पर रख दिया ! – प.पू. स्वामिजी

मूर्ति गुणातीत तेरी हे काकाजी, चमत्कारी मूर्ति तेरी........'रास'

प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी हो वह मेरी एक मुराद थी। – प.पू. गुरुजी

प.पू. स्वामिजी को स्मारक डाक टिकट का एल्बम अर्पण करते मा. श्री अरुण शौरीजी

प.पू. काकाजी महाराज की मूर्ति को हार अर्पण करने
की कमलजी की ख्वाईश मानो पूरी हुई !

'सोविनियर' का उद्घाटन करते
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

अगर हम 'चार आना' भी काकाजी जैसे बनेंगे तो
देश का उद्धार होगा, हमारा उद्धार होगा।
— मा. शौरी साहेब

केक कटिंग करते प.पू. स्वामिजी,
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी

स्वागत उद्बोधन करते प.भ. विकास मल्कानी

प.पू. ज्योति बहन को हार अर्पण करती
सौ. शोभना भाभी

'स्वागत स्वीकार' करती
संतदर्शन उत्सुक साक्षीजी

प.पू. गुरुजी का 'मन' बन कर सभी को हमेशा प.पू. गुरुजी की मर्जी में झबोती रहतीं प.पू. दीदी

पू. त्यागवल्लभस्वामी ने,
पंजाब मंडल की ओर से **प.भ. रमेशजी (कनेडा वाले)** ने,
सांकरदा संतमंडल की ओर से **पू. बापुस्वामी** ने
हार-कलगी अर्पण किए।

मुंबई के **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** के परिवार ने एक विशिष्ट हार बनाया था। वह हार जब प.भ. अग्रवालजी प.पू. गुरुजी को पहनाने गए, तो प.पू. गुरुजी ने पहनने से पहले ही वह हार लेकर प.पू. स्वामिजी को अर्पण किया।

तत्पश्चात् **पू. विनुभाई मेहता** (मुंबई) ने एक भेंट अर्पण करी और **पू. विज्ञानस्वामी** ने हार अर्पण किया।

हारविधि के पश्चात् केक कटिंग हुई। आज के लिए **60 किलो की विशेष केक** बनाई थी, जिस पर **अखंड भारत** का नक्शा बनाया था और बीचोंबीच श्रीजी महाराज की मूर्ति रखी थी व प.पू. काकाजी का अभयदान देता हुआ हाथ दर्शाया था। केक कटिंग के दौरान ही **प.भ. हेरतभाई मेहता** ने भजन गाकर अपनी भावनाएं व्यक्त करीं और **इस उत्सव के लिए खास आए प.भ. महेन्द्र कपूरजी व उनके बेटे प.भ. रोहन कपूरजी** ने स्मारक डाक टिकट के विमोचन निमित्त स्वरचित निम्न महिमाभरी व हृदयस्पर्शी पंक्तियाँ गाकर सभी को भावविभोर कर दिया...

'प.पू. काकाजी की मोहिनी मूरत,
जो गुरुजी ने हमारे दिलों में बसाई है,
आज उसी प्यारी छबि को लेकर,
सरकार ने स्टेम्प बनाई है।
धन्य-धन्य हो जाएगी वो चिट्ठी,
जिस पर ये स्टेम्प लग जाएगी,
भाग्य खुल जाएंगे उसके, अमर वो कहलाएगी।'

प.भ. महेन्द्र कपूरजी ने उस दिन 102 डिग्री बुखार व हाई बी.पी. की तकलीफ होने के बावजूद प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक लगाव होने के कारण एक भजन एवं **'मेरा रंग दे बसंती चोला'** देशभक्ति गीत गाकर सभी को खूब राजी कर लिया। सच, **प.पू. गुरुजी ने प्रभु अखंड रखे हैं** वह ऐसे प्रसंग से पता चलता है कि **जो भी उनके संबंध में सिर्फ एक बार भी आता है, वे अपनी विरल साधुता, सादगी, सहजता, अपनेपन से उसके दिल में बैठ ही जाते हैं।**

केक कटिंग की विधि के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशिष प्रदान करते हुए कहा–

'...काकाजी की कोमेमोरेटिव स्टेम्प निकली है और आप इतने भाव से यहां आए हो इसलिए मेरी एक फर्ज़ भी बनती है। तो मुझे भी कुछ रिटर्न में देना है। एक वचनामृत में महाराज ने कहा कि बड़े-बड़े संत हों, उनमें जो बात को समझते हों, वो आगे आओ और एक बात ध्यान से सुनो। फिर महाराज ने यहां तक कह दिया कि मेरा कोई बड़प्पन दिखाने दंभ से ये बात नहीं कर रहा, लेकिन मेरी एक भावना है– देखो ये बात महाराज बड़े संतों को कह रहे हैं और उसमें भी कहते हैं कि ***अगर 'किसी कोई' को यह बात समझ में आ जाए*** *तो उसके जीव का बहुत श्रेय हो जाए... वो बात क्या थी ? प्रगट की निष्ठा की बात थी ! महाराज ने बाद में जो सारी बातें करीं उसका तात्पर्य यही है कि 'प्रगट' ऐसे भगवान जिसने अखंड रखे हों ऐसी विभूति में निष्ठा– उसके साथ अनन्यभाव का एक संबंध हम कर लें। वो बात महाराज समझाना चाहते थे और यह कोई नई बात भी नहीं है। काकाजी ने बताया था– गीता का आखिरी श्लोक सच में रहस्य का श्लोक है कि जहां धनुर्धारी अर्जुन है, जहां योगेश्वर कृष्ण है वहां श्री है, विजय है, लक्ष्मी है, कीर्ति है। हर एक शास्त्रों, विभूति पुरुषों, संतों, अवतारों ने यही बात रखी है कि ऐसी विभूति के साथ एक अनन्यभाव का अपना संबंध हो जाए।* ***हम कैसे भी होंगे उसकी चिंता नहीं। दूसरी ओर हम कैसे ही ठीक-ठाक भी होंगे, उसकी कोई वेल्यू भी नहीं है, अगर बोटाद के 'शिवलाल सेठ' की तरह हमारे ये संबंध में कसर रही हो तो।'***

परम पूज्य गुरुजी के आशीर्वचन के बाद **परम पूज्य स्वामिजी ने आशिष वर्षा** करते हुए कहा–

'...मुझे गुरुजी जँचता है उसका एक ही कारण है। प्रसंग तो जीवन में आते ही हैं; पर गुरुजी भजन करते हैं। कई सालों से मैं देखता हूँ काकाजी की कृपा से वो भजनिक बना। जब प्रसंग बने तो, वह भजन करने के लिए बैठ जाए। स्वयं का, समाज का और समझदारी का सब भार काकाजी के सिर पर है– ऐसी भावना से वो भजन में डूब जाता है। फलस्वरूप बल मिलता है, फलस्वरूप इंद्रियों-अंतःकरण अलग हो जाते हैं, फलस्वरूप आत्मा अव्यक्त से मुक्त होकर प्रभु में डूबता जा रहा है। महंतस्वामी एक बात कायम करते थे कि 'सर्व कर्ता-हर्ता प्रभु ही हैं'– इस प्रकार के भाव से यदि हम जीएंगे, तो 90 प्रतिशत सत्संग हो गया ! प्रसंग बनते हैं अहंकार को निकालने के लिए, स्व के भाव को निकालने के लिए, स्व-समझदारी को निकालने के लिए, स्व समझदारी के बोज से छुड़ाने के लिए, शिष्यों का राग छुड़ाने के लिए... सिर्फ प्रभु के बल से जीनाहै। 'आप ही मेरा सर्वस्व, मेरे इंद्रियों-अंतःकरण के प्रकाशक, प्रेरक, प्राण आप ही'– ऐसे प्रकार के भाव में रहते हुए हम टोटल निःस्पृही

होकर, हल्का फूल होकर सेवा करते रहें वही सच्चा 'भक्त' का - 'भुलकुं' का लक्षण है...जीवन बहुत थोड़ा है, हम चले जाने वाले ही हैं। हर एक सैकण्ड करोड़ों रुपये से ज्यादा है। जो 'भक्त' है, जिसे भगवान और संत की निष्ठा है, उसकी हर एक सैकण्ड अरबों से भी अधिक मूल्य की है। इस प्रकार के भाव से तटस्थ होकर तत्परता से सिर्फ प्रभु प्रसन्नता के लिए जीवन जीना चाहिए...

*गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद ! काकाजी की ये मूर्ति का लाखों-करोड़ों लोग दर्शन करेंगे। दर्शन ही काफी हैं। **जाने-अनजाने काकाजी की स्टेम्प का जिसे दर्शन हो जाएगा उसकी आत्मा प्रभु की ओर यात्रा करती रहेगी !** गुरुजी ने बहुत श्रम उठा कर ये स्टेम्प निकालने के लिए प्रयत्न किया-इतना प्रयत्न किया... वो उत्सव आज हमने मनाया। अरुण शौरी, हमारे काशीरामभाई सब लोग इसमें निमित्त बने। एक उत्सव वो भी किया और दूसरा उत्सव– गुरुजी ने '**शिवलाल सेठ**' के दृष्टांत से जो ऐसा संबंध करने की अनमोल बात बतलाई। प्रभु और गुणातीत पुरुष बुद्धियोग देकर वो सबंध कराएं ऐसी प्रार्थना !'*

आशिष पाकर सभी ने अद्‌भुत आतिशबाजी का दर्शन किया और... विसर्जन प्रार्थना के साथ ही इस अविस्मरणीय अवसर की पूर्णाहुति हुई ....प.पू. काकाजी महाराज की 'पुष्प समाधि' पर दीयों से करी सजावट हर एक को मार्मिक संकेत दे रही थी कि **प.पू. काकाजी ने खुद मिट जाकर हर एक के जीवन में प्रकाश भर दिया !** उसके दर्शन करते हुए सभी ताड़देव के परिसर व अक्षरज्योति की साईट पर महाप्रसाद लेकर विदा हुए।

लगभग पाँच घंटे लगातार यह सभा चली, लेकिन आत्मा की भूख तृप्त करने आए मुमुक्षु बिना थकान यह अमृतपान पी रहे थे। **स्विट्ज़रलैन्ड में रहने वाले नवाब अलीखान साहेब** तो प.भ. एन.के. अग्रवालजी के संबंध से पहली बार ही उत्सव में आए थे। उन्हें पाँव की कुछ तकलीफ भी थी, सो प.भ. अग्रवालजी ने उन्हें कहा भी कि आपको इतनी देर बैठने में तकलीफ हो रही होगी, तो चलो प्रसाद ले लेते हैं। पर, उन्होंने कहा कि सभा में बहुत ही आनंद आ रहा है, अभी बैठते हैं; बाद में खाना खाएंगे। वे बहुत ही खुश हुए और प.पू. गुरुजी को आग्रहपूर्वक स्विट्ज़रलैन्ड आने का निमंत्रण भी देकर गए।

मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने डाक टिकट जारी होते ही एक लिफाफे पर प.पू. काकाजी महाराज की पहली डाक टिकट लगा कर दिल्ली से ही प.पू. गुरुजी को लेटर पोस्ट किया। भक्तिभरे हृदय से उन्होंने प.पू. गुरुजी को निम्न प्रार्थना लिखी थी–

'कोटि-कोटि धन्यवाद है आपको कि ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की साक्षात्कार स्वर्णजयंती के पावन अवसर पर ऐतिहासिक स्मारक डाक टिकट जारी होती लाईव देखने का आपने हमें मौका दिया। हम आपके बहुत आभारी हैं.... सभी भक्तों, बहनों, भाईयों, भाभियों को धन्यवाद जिन्होंने आपको इस योजना को साकार करने में सहयोग दिया। इस पावन मंगलमय अवसर पर आपके चरणों में प्रार्थना कि हम आपके कहे मुताबिक प.पू. काकाजी के गुणों को ग्रहण करके उस रास्ते पर चलते जाएं...'

लेफ्टिनन्ट जनरल वालिया साहेब इस उत्सव के बाद सहज बोल उठे कि– **प.पू. गुरुजी केवल थियोरी पर नहीं, बल्कि उनकी हर बात प्रेक्टिकल एप्लाईड होती है।**

स्टेम्प उत्सव के प्रोग्राम की जब रूपरेखा तैयार हो रही थी, तब से परम पूज्य गुरुजी की इच्छा थी कि परम पूज्य काकाजी को सत्संग की '**आध्यात्मिक शिविर**' करना बहुत पसंद आता था और... जब गुणातीत समाज के मुक्त इस निमित्त इकट्‌ठे हो रहे हैं, तो शिविर जैसी दो-तीन सभा हों तो अच्छा रहे... संजोगोवश वह सेटिंग नहीं हो पाया। पर, भगवान रखे ऐसे संत संकल्प से ब्रह्मांड में अपने वेव्झ छोड़ते है। परम पूज्य काकाजी ने तो परम पूज्य गुरुजी को आशीर्वाद दिये हैं कि –'**तुम्हारे संकल्प में अमाप बल है।**' तो कोई पूर्व आयोजन ना होते हुए भी 30 मार्च की सुबह ऐसी एक सभा हुई और 31 की सुबह भी परम पूज्य हरिभाई साहेब, परम पूज्य गुरुजी, परम पूज्य दिनकरभाई, पूज्य निर्मलस्वामिजी, पूज्य भरतभाई, पूज्य वशीभाई, परम पूज्य ज्योति बहन, पूज्य दीदी, पूज्य देवी बहन, पूज्य योगिनी बहन के सान्निध्य में मानो घर- घर के मुक्तों की छोटी-सी सभा अपने आप ही एरेन्ज हो गई !

इसी सभा में प.पू. गुरुजी ने माननीय श्री अरुण शौरीजी द्वारा कही गई बात को समझाते हुए कहा कि– *'यह बात अरुण शौरीजी ने नहीं, बल्कि उन पर काबू लेकर प.पू. काकाजी ही बोले हैं। वह यह कि–*

हमें एक आदत लगी है कि हम किसी व्यक्ति के गुणगान गाया करें, लेकिन उस रीत से हम चलते नहीं।

काकाजी इसे दूसरी भाषा में कहते कि 'भाटईवेड़ा' (नौटंकी) छोड़ो ! *तो अब सिर्फ गुणगान गाते रहने के बजाय कि हमारे काकाजी तो ऐसे थे, हमारे काकाजी तो बहुत बड़े थे वगैरह– यह सब छोड़ कर **सच में काकाजी के होकर उनके सिद्धांतों को लेकर जीवन जीएं।***

ये जो मैं कह रहा हूँ कि अरुण शौरीजी में से प.पू. काकाजी बोले उसका तुम्हें प्रूफ देता हूँ। अरुण शौरीजी ने आगे कहा कि काकाजी जैसा जीए हैं–जैसा वर्ते हैं उसका ***'चार आना'*** *हम वर्ते ! तुम विचार करो कि* ***वह आज का पढ़ा-लिखा व्यक्ति है, अभी का व्यक्ति है। वह 'चार आना' बोले ही कैसे ? यदि अरुण शौरी बोलते तो यूं बोलते कि काकाजी जैसा जीए हैं, जैसा वर्ते हैं उसका '25 प्रतिशत' हम वर्ते।*** *पर, वो काकाजी की भाषा में बोला। काकाजी की यह विशेषता है कि किसी में से वे हमें कुछ कहते हैं, तो साथ-साथ वे इन्डीकेशन भी देते हैं कि यह मैं कह रहा हूँ। यूं* ***काकाजी ही उस पर काबू लेकर बोले कि तुम 'चार आना' तो वर्तो...*** *तो, जब इतना अधिक अभी भी काकाजी हमारे पीछे पड़े हैं, क्यों ना– हम सब सारी मान्यताएं (खखा) छोड़ कर सच में उस रास्ते चलें...'*

तत्पश्चात् दोपहर का प्रसाद लेकर मुंबई मंडल प.पू. भरतभाई के साथ नोएडा में नवनिर्मित बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर दर्शन करने गया। 31 की रात की फ्लाईट से परम पूज्य दिनकरभाई शिकागो के लिए चले गए और... परम पूज्य ज्योति बहन, पूज्य देवी बहन जम्मू तवी से विद्यानगर लौटने निकले...

ताड़देव के परिसर में रात को प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. गुरुजी, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. भरतभाई के सान्निध्य में प.पू. काकाजी महाराज के 'स्मृति स्थल' पर गरबे का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प.भ. घनश्यामभाई, राजकोट से आए प.भ. कानजीभाई वगैरह भाईयों ने गरबा-भंगड़ा करके खूब आनंद किया।

इसी दिन **पू. योगिनी बहन** का जन्म दिन भी था। सो, प.पू. दीदी के सान्निध्य में सभी बहनों व भाभियों ने पू. योगिनी बहन को हार अर्पण एवं केक कटिंग करके जन्म दिन भी मनाया। पू. सुहृद्स्वामी ने प.पू. गुरुजी की आज्ञा से खास इस दिन के लिए आईसक्रीम बनाई थी। भक्तिभाव-प्रेमभाव से बनी यह आईसक्रीम सभी को परोसी गई ! सभी अपने-अपने उतारे पर ठहरने चले गए और एक अप्रैल की सुबह प.पू. हरिभाई साहेब, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. भरतभाई व मुंबई मंडल फ्रंटीयर मेल से मुंबई के लिए निकले...

30 मार्च की सायं ही **'डाक टिकट प्लेस केन्सलेशन'** का एक समारोह तपोभूमि ब्रह्मज्योति-मोगरी, गुजरात में प.पू. काकाजी महाराज के समाधि स्थान पर अनुपम मिशन के पू. शांतिभाई, पू. डॉ. सनंदभाई, पू. डॉ. वी.एस. पटेल एवं व्रतधारी भाईयों, हरिधाम एवं सांकरदा के संतों और गुणातीत ज्योत की बहनों की उपस्थिति में आणंद पोस्टल डिवीझन के बड़े अफसरों ने भी किया !

प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार स्वर्णस्मृति श्रीमद् भगवद्गीता की पंक्ति– **'संस्मृत्य संस्मृत्य... विस्मयो मे.... हृष्यामि च पुनः पुनः'** की तरह हर एक के जीवन के लिए एक पूंजी रूप शाश्वत् स्मृति बन गई !

✡✡✡

[प.पू. गुरुजी ने 30 मार्च की सुबह घर-घर के मुक्तों की सभा में व शाम को प.पू. काकाजी के स्मारक डाक टिकट जारी होने के साथ अपने प्रागट्योत्सव की सभा में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के समय के 'भक्तराज शिवलाल सेठ' की मिसाल लेकर बहुत ही मार्मिक बात करी। प.पू. स्वामिजी को प.पू. गुरुजी द्वारा कही बात खूब ही जँची। प.पू. स्वामिजी ने वही बात अपने प्रवचन में दोहराई... मुंबई के प.भ. हेमंतभाई मर्चंट ने ये बातें 'अक्षरधाम' पत्रिका में गुजराती में भी विस्तारपूर्वक दी। सभी मुक्तों के लाभ हेतु इसे हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं।]

सत्संग में 'कुसंग' और मुक्तों की 'माया' ?

प.पू. काकाजी कहते–
'जीवन का प्रवाह जिस प्रकार बहता है उसके द्वंद्वों से परे होने के लिए
दिव्यतत्त्व जो कि मानवरुप में प्रगट हुआ, मूर्तिमान हुआ उसके साथ
अर्जुन की तरह सखाभाव से या गोपियों की तरह मधुरभाव से या हनुमान की तरह दासभाव से
अनन्यभाव का संबंध *दृढ़ करना पड़े।*
प.पू. योगीबापा ऐसा वारसा रख कर गए हैं।
लेकिन, वह संबंध हमारे तरीके का नहीं–सच्चा दिव्य संबंध कि जहां
चाहे कैसे भी प्रसंग या परिस्थिति में आत्मीयता खंडित हो ही नहीं।'

प.पू. काकाजी की यह बात गुणातीतभावना में प्रवेश करने निकले हर एक श्रेयार्थी साधक के लिए दीपस्तंभ समान है। गुणातीतभाव को पाई ऐसी ***ब्रह्मस्वरूप विभूतियों के केवल अनुग्रह से ही प्रकृतिपुरुष से पर की भूमिका में हम स्थिर हो सकेंगे।*** *यह बात हमने खूब सुनी और करी। अरे ! भजन भी खूब किया। परंतु किसी न किसी वृत्ति के कारण या गुण की कॉन्सियसनेस के कारण या अन्य*

प्रभाव के कारण हमारे जीव में ये बात ठहर नहीं पाई कि– **'इस साधु से ही मेरा मोक्ष हो पाएगा, सो उसका संग छोड़ना नहीं है।'** (प्र-5, 121) और... 'खुद मावजीभाई' होने के जंजाल में भी हम रमे...

विचार को पाएं कि–
आज से करीब 160 वर्ष पहले....

* जिसके पास दस लाख रुपयों की नकद पूँजी थी... अर्थात् **पैसे-टके से जो समृद्ध** था,
* जिस पर सद्‌गुरु आत्मानंदस्वामी व अनादि मूल अक्षरमूर्ति **गुणातीतानंदस्वामी की अखंड ममतामयी** दृष्टि थी,
* परिवार में शादी के अवसर पर आई साली जो कि कई दिनों तक उसे भोजन परोसे, फिर भी उसकी ओर कभी नज़र ना गई होने के कारण ख्याल ही नहीं पड़ा कि साली अभी भी उनके यहां ही है ऐसे **विरक्त और स्वधर्म में चुस्त,**
* हर रोज एक ही रास्ते से आने-जाने के बावजूद मार्ग में बनी नई हवेली की ओर जिसकी निगाह न जाए ऐसी जिसकी **दृष्टि और वृत्ति अंतराभिमुख** थी,
* संसार की अनेक झंझटों और खूब चलते धंधे की व्यस्तता में भी जो 4 से 5 घंटे निर्विकल्प रुप से प्रभु की मूर्ति में ध्यानस्थ रह सकता था– यूं **आत्मा से भी जो समृद्ध** था,
* सत्संग के सद्‌गुरु, बड़े-बड़े संत तथा आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज भी उसकी श्रीमंताई से नहीं बल्कि स्वधर्मनिष्ठा और भक्ति के कारण उसे अत्यंत आदर से देखते !

सत्संग के बीम समान ऐसे **बोटाद के शिवलाल सेठ** को एक बार भरी सभा में सद्‌गुरु गुणातीतानंदस्वामी ने टोकते हुए कहा–

'तेरे मन में (तू) यूं समझता है कि मैंने गढडा में मूर्ति प्रतिष्ठा करवाई और भावनगर में रघुवीरजी महाराज पधराए, वह बहुत बड़ा काम किया; परंतु तेरे जीव के सामने देखता हूँ तो वहां तो **आधा ही सत्संग रहा है**.... ऐसे साधु को छोड़ कर जो-जो सुख की इच्छा करनी, वह तो जैसे एक दिन गाय का बछड़ा खूंटी से छूट कर गौशाला में गया और समझे कि दूध का सुख ले लूं। वहां तो पड़ड़े थे, तो मुँह लगाए कि लातें पड़े। वह लातें खाते-खाते मुँह तो सूज गया और दूध का सुख भी नहीं मिला; इतना ही नहीं, पर बछड़े की मां आई, तब उससे दूध भी नहीं पी पाया। ठीक उसी प्रकार ऐसे साधु को छोड़ कर और कहीं सुख लेने जाना, वह तो लातें खाने जैसी बात है। क्योंकि वे आज्ञा–उपासना में भंग डालेंगे और तब ऐसे साधु के पास नहीं बैठ पाओगे, जैसे गाय का बछड़ा गाय (अपनी मां) के पास नहीं जा पाया। यह कह कर स्वामी बोले कि **दो महीने तक यूं बातें करूंगा, तब जैसे पहले तुम्हारा जीव भगवान में जुड़ा हुआ था, वैसा जुड़ पाएगा।** इतना तुम में स्थूलभाव आ गया है और यह बातें तो भगवान में जुड़ जाने की हैं।' (स्वामी की बात प्र-3,21)

इसे ही प.पू. काकाजी कहते कि 'सत्संग यानि सत्पुरुष !'

इसी तरह फिर एक बार स्वामी ने उन्हें पूछा कि 'आज कहां गए थे ?' तब उन्होंने कहा कि आज तो शहर में गया था और कहा कि एक रसोई लेकर आया हूँ। तब स्वामी ने पूछा कि रसोई कैसी ? तब शिवलाल सेठ ने कहा कि एक जगह से सोना खरीद कर दूसरी जगह पर बेचा था, उसमें डेढ़ सौ रुपये की कमाई हुई उसकी रसोई। तब स्वामी बोले कि वह तो ठीक, परंतु सोना खरीदने का विचार उठा, पर किसी दिन सौ करोड़ मन गेहूँ का भूसा खरीद कर कमाई कर लें ऐसा संकल्प उठता है क्या ? तब शिवलाल बोले कि नहीं महाराज ! तब स्वामी बोले कि– 'बड़े साधु की निगाह में तो महाराज की मूर्ति के सिवा प्रकृति पुरुष तक सारा भूसा ही है, अन्य किसी चीज़ में माल नहीं दिखाई पड़ता। सो, तुमने **इतनी देर तक ऐसे साधु के दर्शन और बातें गवाँ कर भला क्या कमाई करी ?** यूं कह कर बुद्धि का आडंबर टाल दिया।'

इसे ही तो प.पू. काकाजी कहते थे ना कि– 'शुभ संकल्प भी नहीं !'

बाकी, सत्संग के प्रति के ममत्व के कारण बाज़ार से मंदिर आते हुए सौदा करके रुपये 150 कमा कर मंदिर के लिए रसोई लाने में क्या गलत किया ?

स्वामी ने खुद ही तो अथक् परिश्रम से उसके अंतर को ऐसा घड़ा था कि 'माया' उसे छू ही ना पाए– बाहर का कुसंग तो उसे बाधारुप हो नहीं सकता था।

*लेकिन, वर्षों पहले हमने प.पू. काकाजी से सुना है कि– **'गढडा का कुत्ता भी जूनागढ़ के साधु को भौंके।' सत्संग का वह कुसंग** कहें या **मुक्तों की माया** कहें– उसमें शिवलाल सेठ फंस गया और **गढडा वालों की मोहब्बत के कारण उनके बहकावे में** आकर **'जूनागढ़ के उस जोगी' के प्रति के दिव्यभाव और अनन्यनिष्ठा में फर्क पड़ गया - दूरी आ गई !***

*इसीलिए तो **'आधा सत्संग रहा है' ऐसे शब्द स्वामी को कहने पड़े !** अर्थात्– तेरे पीछे किया मेरा परिश्रम सत्संग में रहे कुसंग के कारण व्यर्थ ना हो उसकी मर्म में चेतावनी दी।*

यूं, कोई निजी अधिकार से उसकी आत्मा के श्रेय के लिए ही सहज करुणा से मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने उनके साथ के संबंध में पड़ी गांठ - दूरी को ज़रा भी नज़रअंदाज़ नहीं करी !

*इससे स्पष्ट होता है कि **हमारी बाह्य या आंतरिक समृद्धि या स्वधर्मपरायणता या नैतिकता या सद्‌गुणों और नियम-धर्म या मर्यादा का स्थानापन हमें प्रकृतिपुरुष से परे की भूमिका में ले जाने बिलकुल निरर्थक ही है।** वहां तो प्रकृतिपुरुष से परे की ऐसी ब्रह्मस्वरूप विभूति के साथ–**अतिशय बड़े सत्पुरुष के साथ अनन्यभाव से दृढ़ करा दिव्य संबंध ही काम आता है ! इस संबंध में दरार पड़ जाए-दूरी आ जाए, तो हम में रहे सारे के सारे सद्‌गुण भी अभद्र हैं।***

*परोक्ष में भी भीष्मपितामह, युधिष्ठिर या सुधन्वा जैसी स्वधर्मनिष्ठ, आत्मनिष्ठ विभूतियाँ भक्ति, सिद्धदशा वगैरह में अजोड़ और अप्रतिम थीं। दूसरी ओर अर्जुन- जहां गया वहां से सुंदरियों को उठा ले आया, लेकिन **अनन्यभाव से वह श्री कृष्ण से ही जुड़ा रहा।** स्वयं की सभी निजी मान्यताओं-महत्त्वकांक्षाओं, जीवनशैली, सगे-संबंधियों के प्रति की ममता की अवहेलना करके केवल श्री कृष्ण भगवान के अभिप्राय की भक्ति में वह जुड़ गया। कोई सिद्धांतिक आदर्श, सात्त्विकता, सामाजिक प्रतिष्ठा या नियम-मर्यादा श्री कृष्ण के प्रति की भक्ति में उसे रंचमात्र भी डिगा नहीं सके। तो, प्रभु ने उसे नारायणस्वरूप बना कर नरनारायण रूप में अपने साथ पुजवाया !*

अध्यात्म मार्ग के हम सभी पथिकों को यह रहस्य समझ कर खूब सावधान रहना जरुरी है कि ऐसी कोई 'अच्छाईपेशी' या 'वाहवाही' की सात्त्विक भूख के कारण प्रतिष्ठा की चमक-दमक में प्रभु ने हमें जो अतिशय बड़े पुरुष के साथ जोड़ा हो- उनके साथ के संबंध में दरार तो नहीं आई ना ?

प.पू. काकाजी तो– 'सर्वदेशीय विभूति'– वे हम सभी जानते हैं। लेकिन, अनन्यभाव से वे सिर्फ प.पू. शास्त्रीजी महाराज और प.पू. योगीजी महाराज के थे– वह भी हम सभी समझते हैं।

प.पू. पप्पाजी ने भी कहा है–

महाराज ने हमें सबसे पहले जहां जोड़ दिया हो, उसके द्वारा ही हमारी साधना सरल और स्पीडी रहेगी।

तो, प.पू. काकाजी के 'साक्षात्कार की स्वर्णस्मृति' जब हम मना रहे हैं तब उनकी जीवनशैली को ही सतत् नज़र समक्ष रख कर– हम भले कैसे भी हों लेकिन– अन्य सभी में दिव्यभाव और पूज्यभाव रखते हुए अतिशय बड़े पुरुष के साथ का हमारा सच्चा अनन्य संबंध किसी भी कारण कभी भी रंचमात्र गौण नहीं होने दें और उनके अभिप्राय की भक्ति में कभी भी कमी ना आए यही भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज तथा सभी प्रगट गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

[उत्सव से फारिग होने के बाद सभी उत्सव की वीडियो कैसेट देख रहे थे। उसमें प.पू. गुरुजी का जब प्रवचन आया तो सभी ने नोट किया कि 'शिवलाल सेठ' की बात करते हुए प.पू. गुरुजी के मुख पर जैसे दर्द की लकीरें खींच गई हों। यह देखते ही प.पू. गुरुजी स्वयं भी एकदम बोले कि –160 वर्ष पहले की 'शिवलाल सेठ' की बात करते हुए जब मेरे फेस पर एक दर्द उभरा तुम्हें स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि ओहो इतने अधिक गुणों के होते हुए भी सत्संग के ही 'कुसंग' में फंसने के कारण मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के साथ के उसके संबंध में कसर रह गई ? तो विचार करना कि जब हम लोगों की पू. काकाजी से दूरी हो जाती होगी या हम लोग मिलजुल कर रहने के बजाय आपस में खींचातानी करने में यह भव्य संबंध खोने तैयार हो जाते होंगे, तो वह देख कर पू. काकाजी को कितना दुःख होता होगा ?

यह बात कहते-कहते भी प.पू. गुरुजी का फेस खूब दर्दभरा हो गया था। तो अब 12 जून–**प.पू. काकाजी की जयंती** व 13–जुलाई **गुरुपूर्णिमा** के मंगलकारी अवसर आएंगे, जो प्रगट के उपासकों के जीवन में

अत्यधिक महत्व रखते हैं। इन मंगलकारी दिनों पर हम अंतर से गद्गद् होकर प्रार्थना करें कि हमारी ओर से इन गुणातीत पुरुषों को ऐसा कोई दर्द ना रहे। हम किसी भी तरह उनसे अपना एक अनन्यभाव का संबंध कर लें, जिससे कि **'सत्संग का कुसंग'** या **'मुक्तों की माया'** कैसे भी संजोगों में हमें उनसे दूर ले जाने समर्थ ही ना हो सके। ये गुणातीत पुरुष तो खूब करुणा करके हमारे लिए अक्षरधाम से धरती पर आए हैं। उन्हें हम से कोई स्वार्थ नहीं है। वे तो हमें सुखी ही करना चाहते हैं। वे हमें जन्म-मरण के चक्करों से मुक्त करके हमारा आखिरी जन्म करने—हमारी पूर्णाहुति कराने का बस एकमात्र अरमान रखते हैं। तो हमारे ही जीव की भलाई के लिए उनके इस अरमान को पूरा करने हम भी अब कृतनिश्चयी बनें। तो ही **12 जून** व **गुरुपूर्णिमा** के पावन पर्व सही अर्थ में मनाएं माने जाएं।]

✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

❋ संजोगवश पिछले तीन-चार वर्ष से पंजाब जाते हुए भी प.पू. गुरुजी हमारे पुराने जोगी **प.भ. कमल खुराना** जो कि ज्योतिष विद्या में निष्णात होने के कारण प.पू. काकाजी के आशीर्वाद से पंजाब में **'ज्योतिष सम्राट कमल देव'** के नाम से अत्यधिक प्रसिद्धि को पाए हैं, उनके यहां जा नहीं पाते थे। सो अबकी उन्होंने प.पू. गुरुजी को खूब आग्रहपूर्वक कहा कि—

'गुरुजी, मैं मानता हूँ कि गर्मी है। आपको तकलीफ तो पड़ेगी, पर आपके साथ प.पू. काकाजी के जरिए एक बाप-बेटे का हकदावे का मेरा संबंध है। तो, आप जरुर किसी भी तरह दो दिन के लिए तो मेरे घर पर ठहर कर दर्शन, सेवा, समागम का लाभ दें व महापूजा भी करें।'

भगवान अखंड रखे ऐसे संत तो भक्तों की भावना के वश हैं। ऐसे संत का उठना-बैठना, चलना, खाना-पीना, हँसना-बोलना हर एक क्रिया अपने भक्तों को लाड़ लड़ाने के लिए ही होती है। सो, प.भ. कमलदेवजी व परिवार के आग्रहवश प.पू. गुरुजी ने **'बैसाखी' निमित्त** 12 अप्रैल को दो दिन के लिए **लुधियाना** जाने का प्रोग्राम बनाया।

30 मार्च प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट जारी होने के उत्सव पर विशेष रूप से आए प.पू. काकाजी के भतीजे **पू. वीनुकाका**, शिकागो से आए **पू. दासकाका**, अमदावाद से आए **पू. निरंजनभाई दवे**, वडोदरा से आए **पू. राजुभाई परीख** उत्सव के बाद भी दिल्ली रुके हुए थे। प.पू. गुरुजी के लुधियाना जाने का प्रोग्राम जानते ही उन्होंने अपनी वापिस जाने की टिकट पोस्टपोन्ड करवाई और वे सभी पंजाब में प.पू. काकाजी द्वारा किए अथक् परिश्रम - कार्य देखने, प.पू. गुरुजी के साथ पंजाब आए।

12 अप्रैल की सुबह करीब 20 जने गाड़ियों द्वारा जाने निकले। दोपहर को **लुधियाना** में **प.भ. एस. के. गुप्ताजी** के घर ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लेकर **मेहतियाना** व **नानकसर** गुरुद्वारे दर्शन करने गए।

12 की शाम की शताब्दी से प.पू. गुरुजी लुधियाना पहुँचे। स्टेशन पर प.भ. कमलदेवजी, उनका परिवार व लुधियाना-जगरांव के हरिभक्त स्वागत के लिए खड़े थे। सभी के मुँह पर प.पू. गुरुजी के आने की अत्यधिक खुशी झलक रही थी। स्टेशन से प.पू. गुरुजी सीधा कमलदेवजी के घर पधारे। गाड़ियों द्वारा निकले सभी हरिभक्त वहां पहले ही पहुँच चुके थे।

प.पू. काकाजी के आशीर्वाद से प.भ. कमलदेवजी के यहां हर प्रकार की सुख-समृद्धि है। **कमलजी ने बताया कि— वे आज जो कुछ भी हैं प.पू. काकाजी के आशीर्वाद से ही हैं। वह उनका ऋण कभी नहीं भूल सकता।** बातचीत दौरान पता चला कि वे छः-छः घंटे नियमित भजन करते थे और तभी उनके बच्चों में भी ये संस्कार पड़े हैं कि वे भी सुबह भजन करके ही स्कूल जाते हैं।

संतों के प्रति ऐसी भक्ति-भावना का यह दर्शन था कि सारे घर को उन्होंने शादी के माहौल की भांति रोशनी वगैरह करके सजाया था! गुलाब की पत्तियाँ बिछा कर गलीचा बनाया था। चारों ओर गुलाब के फूलों के गुलदस्ते व टीशू के कपड़े से सजावट करी थी। परिवार के सभी लोगों की खुशी का अंदाजा उनके मुँह पर झलक रही उमंग से लगाया जा सकता था। घर में चारों तरफ रौनक-रौनक थी... सौ. मीनाभाभी तो यहां तक बोल उठे कि— **प.पू. गुरुजी के आने से ऐसा लग रहा है कि हमारे परिवार की खोई हुई खुशियाँ लौट आई हैं।** प.भ. कमलदेवजी के साथ उनकी साली सौ. पाली दीदी व साढू साहेब **प.भ. नरेन्द्रजी** भी संतों-हरिभक्तों की सेवा में खूब उमंग-उत्साह से लगे थे। रात को सभी ने प्रसाद लिया और आनंद करके सोने गए।

13 अप्रैल की सुबह भजन करने के पश्चात् प. पू. काकाजी की प्रसादी के गाँव **'सवद्धीकलाँ'**

में **प.भ. सुरेशजी** के यहां जाने निकले। प.भ. सुरेशजी के यहां 11 अप्रैल को ही पोते का जन्म हुआ था, सो दोपहर को ठाकुरजी का थाल वहां करके संतों-भक्तों ने खूब खुशी के माहौल में प्रसाद लिया व आनंद किया। पहली बार पंजाब आए मुक्तों की इच्छा थी कि प.पू. काकाजी की आज्ञा से **पू. दीदी** कुछ महीने जहां ठहरी थीं, वह **प.भ. धर्मपालजी के घर** का दर्शन करना है। सो, सारे भक्त वहां गए और देख कर **पू. विनुकाका वगैरह सभी हैरान जैसे हो गए कि अहो, काकाजी ने इतनी दूर आकर कितना परिश्रम उठाया है !** दोपहर का आराम करके सब वापिस लुधियाना कमलदेवजी के यहां आए।

13 अप्रैल की शाम को कमलदेवजी ने अपने सभी नज़दीकी रिश्तेदारों-परिचितों को बुला कर नवनिर्मित लॉन में सत्संग सभा का आयोजन किया हुआ था। मिल्ट्री बैंड आदि से स्वागत करते हुए प.पू. गुरुजी को सभा स्थल पर ले गए। श्री सुरेन्द्र डावर—एम.एल.ए., सैशन्स जज श्री ए.के. शर्मा, कॉंग्रेस लीडर श्री के.के. बावाजी, स. दलजीत सिंहजी—पोलिस कमान्डेन्ट, श्री जैन साहेब, स. राजवंत सिंह, श्री जैसलजी, श्री सुरेश खन्नाजी वगैरह कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके स्वागत करा। अक्षरनिवासी पू. उत्तमस्वामिजी के शिष्य पू. आनंदस्वामिजी व संतमंडल भी आया था। **पू. आनंदस्वामिजी** ने भगवान स्वामिनारायण की परंपरा व जीवन में संत का स्थान बताते हुए बहुत ही मार्मिक प्रवचन किया व महिमा गाई। **प.पू. गुरुजी से अत्यधिक आत्मीयता से जुड़े प.भ. बरार साहेब भी दर्शन करने आ पहुँचे थे।** प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोद (पंजाब) ने भजनों की रमझट लगा कर माहौल को भक्तिमय बना दिया। प.भ. राकेशभाई शाह, प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी, प.भ. वच्छाराजजी, परम पूज्य काकाजी से जुड़े पुराने जोगी **प.भ. नरेन्द्रजी (अंबाला)** आदि ने अपने भाव व्यक्त किए। प.भ. नरेन्द्रजी ने तो अत्यधिक भावविभोर होकर डंके की चोट पर खूब जोशभरे स्वर में अपने अनुभव बताए। तीन घंटे कहां बीत गए, वो तो पता ही नहीं चला।

प.पू. गुरुजी ने अपने आशीर्वचन में सर्वप्रथम कमलदेवजी को धन्यवाद दिया कि—

दूर-सुदूर रह रहे अपने रिश्तेदारों-परिचितों को सत्संग के लिए खास बुलाया, वो एक बहुत बड़ी सेवा हो गई.... हर एक व्यक्ति आस्तिक है। ***प्रभु को तो हर कोई मानते हैं, पर 'स्टीपनी' मानते हैं।*** *हमारी गाड़ी पंक्चर हो जाती है, जब हमारा बस नहीं चलता तभी प्रभु को याद करते हैं.....*

प्रभु में आस्था तो सभी को है लेकिन श्रीजी महाराज ने वचनामृत में बहुत अच्छी बात बताई है कि वो प्रभु मानवस्वरूप में जिस विभूति द्वारा प्रगट हों, उसकी अगर उसे पहचान हो जाए तो वो भगवान का 'भक्त' बनता है। ***कमलजी ऐसे 'भक्त' हैं।*** *मानवस्वरूप में प्रगटे काकाजी में भगवान स्वामिनारायण के अस्तित्व को उन्होंने सच में माना। बोलना बात अलग है, मानना बात अलग है।* ***ऐसा भक्त जो-जो मनोरथ करता है वो सब सिद्ध होते हैं....***

प.पू. काकाजी कहते 'सत्संग यानि सत्पुरुष' ! ***सत्पुरुष*** *यानि प्रभु जिसके द्वारा अखंड प्रगट रहकर काम करते हों। उसके* ***साथ का अपना अनन्यभाव का संबंध दृढ़ हो वो 'सत्संग' है।***

अनन्यभाव का संबंध यानि— जैसा अर्जुन का कृष्ण के साथ था, मीरां का-राधा का कृष्ण के साथ था, हनुमान का राम के साथ, शिवाजी का रामदासजी के साथ था, ऐसा संबंध—वो सत्संग !

हजारों - लाखों लोग चमत्कार देख कर इकट्ठे हो जाएं वो संत की एसेट नहीं है। लेकिन साधु के संपर्क में जो आए उसके ***जीवन में प्रभु बस जाएं, साधु उसे यह दृढ़ मनवा दे कि प्रभु उसके साथ अखंड हैं — यह साधु का काम है।*** *ऐसा समाज साधु की एसेट है। 'साधु' की एफ. आई. आर. यही है कि उसके पास जाते ही दिल और दिमाग दोनों एक साथ झुक जाएं और पहली ही बार उसे मिलते ही तुम्हें लगे कि मैं उनका हूँ और ये मेरे हैं।*

साधु के साथ के ऐसे संबंध से अपने जीवन में एक निर्भयता - निश्चिंतता रहती है कि कर्ता - हर्ता मुझे मिले प्रभु हैं और वो कभी भी मेरा अहित नहीं होने देंगे !

दो बोरी कंठी-माला खत्म हो जाना, ***हजारों लोग कंठी ले जाएं... वो सत्संग का विकास नहीं*** *कहा जाए। बल्कि* ***निष्ठा वाले परिवार तैयार हों, वो सत्संग बढ़ा हुआ कहा जाए...*** *भगवान स्वामिनारायण ने ऐसे समाज का निर्माण किया, ऐसे भव्य वरदान दे दिए...*

स्वामिनारायण भगवान ने मानवजाति पर सबसे बड़ी करुणा यह कर दी कि ऐसे संतों की परंपरा अखंडित रख दी। ***यह लिविंग फिलोसोफी है।*** *ऐसे भगवान रखे संतों के साथ हमारा दिव्यभाव व अनन्यभाव का संबंध दृढ़ करते जाएं ऐसी बैसाखी के पवित्र अवसर पर प्रार्थना !*

बैसाखी की पूर्व संध्या पर प.पू. गुरुजी के आशिष पाकर सभी धन्य हुए... आत्मा से तृप्त हुए !

कमलदेवजी ने प.पू. गुरुजी का आभार प्रगट करते हुए उन्हें 30 मार्च को प.पू. गुरुजी में हुई प.पू. काकाजी की प्रतीति का अपना अनुभव दर्शन कराया।

जगरांव, सवद्धी, मोगा, अमृतसर, संगरुर, फिलोर, अंबाला, जालंधर, मुल्लापुर, नवाशहर से सभी हरिभक्त सभा में आए हुए थे।

करीब साढ़े चार सौ-पाँच सौ हरिभक्तों ने सत्संग सभा का लाभ लिया... प.भ. कमलदेवजी ने सभी के प्रसाद की व्यवस्था करी हुई थी... सभी प्रसाद लेकर विदा हुए।

14 अप्रैल को **बैसाखी** यानि– **पंजाब के लिए तो नया वर्ष** शुरु होने का दिन ! इस दिन कमलदेवजी के यहां **विशिष्ट महापूजा** का आयोजन किया हुआ था। पू. निमित्तस्वामी ने मंत्रोच्चार के साथ महापूजा की शुरुआत करी। महापूजा संपन्न होने पर प.पू. गुरुजी ने आशिष दिए। तत्पश्चात् सभी ने दोपहर का प्रसाद लिया... फिर अचानक प.पू. गुरुजी ने जगरांव जाने का निर्णय लिया। प.भ. कमलदेवजी के साढू प.भ. नरेन्द्रजी के घर होते हुए जगरांव जाने निकले। जगरांव में **प.भ. झांझी साहेब** के परिवार में 'बैसाखी' का पवित्र त्यौहार होने के कारण प.पू. गुरुजी को बहुत याद कर रहे थे। वहां जाकर पता चला कि इतना कम समय होते हुए भी प.पू. गुरुजी दौड़े-दौड़े जगरांव क्यों आए ? जगरांव के सभी हरिभक्त भी प.पू. गुरुजी का दर्शन करने प.भ. झांझी साहेब के यहां इकट्ठे हो गए थे। वहां से प.पू. गुरुजी सीधे लुधियाना स्टेशन जाकर जम्मू तवी ट्रेन से वापिस दिल्ली आने निकले। स्टेशन पर कमलदेवजी व परिवार एवं लुधियाना-जगरांव के हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी को नम आँखों से विदाई दी।

प.पू. गुरुजी के साथ पहली बार ही पंजाब आए पू. वीनुकाका, पू. राजुभाई परीख तो यहां के भक्तों की भावना व प.पू. काकाजी द्वारा किए गए परिश्रम एवं भक्तों का प.पू. गुरुजी के प्रति अप्रतिम लगाव-विश्वास देख कर ताज़्जुब रह गए और सहज ही बोल उठे कि–

'हमें तो इतना ख्याल ही नहीं था कि उत्तर भारत में प.पू. काकाजी द्वारा तैयार किया इतना अधिक आत्मीय समाज है। *हम प.पू. गुरुजी के खूब आभारी हैं कि उन्होंने हमें यहां लाकर प.पू. काकाजी की महिमा का दर्शन कराया।'*

✱ प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट जारी होने के अवसर पर हमारे आत्मीय स्वजन **केंद्रीय वस्त्र मंत्री माननीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब** सुरत में कुछ अत्यावश्यक काम के कारण दिल्ली आ नहीं पाए थे। प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी हो, ऐसी प.पू. गुरुजी के अंतर की इच्छा जान कर मा. श्री काशीरामभाई ने जिस अपनेपन-आत्मीयता से सहयोग दिया है, वह गुणातीत समाज – दिल्ली के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा। 30 मार्च की शाम को दिल्ली के हर एक मुक्त ने प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब की कमी महसूस करी। **राणा साहेब को स्वयं भी इस उत्सव पर ना आ सकने का दिल में काफी अफसोस था।** सो, प.पू. गुरुजी ने भी उन्हें कहा था कि दिल्ली आने पर आप मंदिर आने का प्रोग्राम जरुर रखना।

राणा साहेब 22 अप्रैल 2003 को दिल्ली लौटे और 24 अप्रैल को मंदिर आने का उन्होंने प्रोग्राम बनाया। प.पू. गुरुजी व मुक्तों को बहुत ही आनंद हुआ। सब उनके आने की तैयारी में लग पड़े... सभी के मन को ऐसा लगा कि– अब अपना उत्सव पूरा हुआ !

24 की शाम को सभी हरिभक्त मंदिर के परिसर में इकट्ठे हुए... मंदिर के पीछे बने उद्यान में सभा का आयोजन था। तिरंगे झंडे के रंगों से बनी फूलों की लड़ियों से मंदिर का गेट व सभा मंडप सुशोभित हो रहा था। श्री राणा साहेब करीब साढ़े आठ बजे आए... प. भ. पुरी साहेब, प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी, प.भ. भद्रायुभाई जानी ने उनका स्वागत किया। सबसे पहले उन्होंने ठाकुरजी के दर्शन करके हॉल में लगी परम पूज्य काकाजी महाराज की चित्र प्रदर्शनी देखी। परम पूज्य काकाजी महाराज के जीवन बारे परम पूज्य दीदी से इतना विस्तारपूर्वक सुन कर वे बहुत ही प्रभावित हुए और प्रत्यक्ष रूप में **प.पू. गुरुजी की उसी तरह की सादगी भरी जीवनशैली उन्हें स्पर्श कर गई।**

आज खुशी का मौका होने के कारण प.पू. काकाजी के समाधि स्थान को दीयों से सजाया था। प.भ. राणा साहेब समाधि स्थान पर दर्शन करके नवनिर्मित 'शिलालेख' जिस पर दिल्ली मंदिर का सारा इतिहास लिखा है, वह पढ़ कर सभा में आए। प.पू. गुरुजी व भक्तों ने तालियों की गड़गड़ाहट भरी गर्मजोशी से उनका अभिनंदन किया। प.भ. पुरी साहेब ने प.भ. राणा साहेब को बैज अर्पण करके प.पू. काकाजी की डाक टिकट बारे प.भ. राणा साहेब द्वारा किए अथक् प्रयासों की तहेदिल से सराहना करते हुए स्वागत प्रवचन किया। तत्पश्चात् प.भ. राकेशभाई ने नए बने भजन गाकर व युवकों ने गरबा करके सभी को 30 मार्च के उत्सव की स्मृतियों में लीन कर दिया।

हमारे जीवनकाल में प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट की सेवा देने के बदले आभार व्यक्त करते हुए **प.भ. अनुज भईया** ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया... प.पू. गुरुजी ने वह हार **'गुजरात धारा'** के सम्पादक **प.भ. विराटभाई शाह** को प्रसन्न होकर पहनाया। इन्होंने दिल्ली से गुजराती भाषा में प्रकाशित होती इस मासिक के आकर्षक मुखपृष्ठ पर प.पू. काकाजी की डाक टिकट की मूर्ति दर्शाई है व अंदर प.पू. काकाजी का जीवन परिचय व डाक टिकट के उत्सव की विस्तृत जानकारी दी है। **प.पू. गुरुजी** ने बताया कि–

उन्होंने मुखपृष्ठ पर प.पू. काकाजी की मूर्ति दी उस वजह से मैं खुश नहीं हुआ, बल्कि अधिक परिचय भी ना होते हुए प.भ. विराटभाई ने संकुचितता छोड़ कर एक विशाल दृष्टि से कि–

'जब भारत सरकार गुजरात के प.पू. काकाजी का इतना बहुमान कर रही है, तो हम क्यों संकुचितता के दायरे में पड़े रहें ? यह तो हम सभी के लिए अत्यंत गौरव की बात है – *यह भावना दर्शाई है।'*

यूं, प.पू. गुरुजी ने प.भ. विराटभाई की इस भावना को-कार्य को बहुत ही प्रशंसनीय बताया।

तत्पश्चात् प.भ. राणा साहेब के लिए विशेष रुप से तिरंगे झंडे के रंगों को लेकर रेशम से बनाया हार **गुजराती समाज के स्तंभ** व हमारे पुराने जोगी **प.भ. हिम्मतभाई ठक्कर** ने उन्हें पहनाया। **प.भ. मल्कानी साहेब** ने शाल ओढ़ा कर प.भ. राणा साहेब का सम्मान किया और प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की स्मृति डाक टिकट के मौके पर निकली विशेष अल्बम में इस अनुपम सेवा के फलस्वरूप आशीर्वाद लिख कर भेंट स्वरूप दी... 30 मार्च की स्मृति भेंट रुप प.पू. काकाजी की डाक टिकट का सोविनियर, पेन व नव प्रकाशित पुस्तिका **'सर्वोपरि स्वामिनारायण क्यों ?'** **प.पू. दीदी** ने प.भ. राणा साहेब को दी।

भजन के पश्चात् **प.भ. राणा साहेब** उनकी ख़ानदानी व विनम्रता व्यक्त करते हुए बोले कि–

सभी वक्ताओं ने कहा कि मैंने यह डाक टिकट का बहुत बड़ा काम किया, पर असल में प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी ने किया है। अगर प.पू. गुरुजी मुझे इसके लिए नहीं कहते तो मैं भला क्या करता ? मैं तो मात्र निमित्त बना। प.पू. गुरुजी ने इस डाक टिकट के लिए दिन-रात नींद वगैरह देखे बिना अत्यधिक परिश्रम उठाया। भजन में लाईन आई थी कि संकल्प से ब्रह्मांड डोलाए, तो प.पू. गुरुजी के संकल्प से यह हुआ है। ***मैं तो ऐसा मानता हूँ कि मैं इस कार्य में निमित्त भी बन सका यह मेरे जीवन का सौभाग्य है।*** *मुझे यह करने की ताकत–प्रेरणा भी प.पू. गुरुजी से ही मिली।* ***मुझे आज परम सुख की अनुभूति हो रही है।*** *आपके भाव, सम्मान, आपका इतना अधिक लगाव देख कर मुझे लग रहा है कि मुझे सब कुछ मिल गया।* ***पू. दीदी ने जो कहा कि– '30 मार्च का कार्यक्रम सही अर्थ में आज पूरा हुआ' वह मुझे खूब स्पर्श कर गया। मैं खूब नसीबदार हूँ कि मैंने यह एक काम किया, पर उसका कितना बड़ा लाभ मुझे मिल गया !*** *मैं आप सब का बहुत ही आभारी हूँ। मैं आज प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे ही काम हमारे जीवन के अंतिम श्वास तक हमारे द्वारा होते रहें।*

हाँ, प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी होना कोई आम बात नहीं... कोई सामान्य बात नहीं, यह असाधारण घटना है। *प.पू. काकाजी के जीवन की चित्र प्रदर्शनी देख कर मुझे ख्याल आया कि प.पू. काकाजी कैसे विराट शक्ति वाले युगपुरुष थे।* ***दरअसल में तो प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी करके सरकार स्वयं सम्मानित हुई है।***

प.भ. राणा साहेब बोलते-बोलते खूब ही भावविभोर हो गए थे। प्रार्थना करते हुए वे बोले कि– ***बस गुरुजी, आपके दिल में मेरा स्थान बना रहे।*** *जो कुछ भी हो पाया है वह सब कुछ आपकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से ही हो पाया है। आपके और हमारे बीच आत्मा से आत्मा का मिलन होता रहे। हम प.पू. काकाजी के रास्ते पर चलें, उनके दिए ज्ञान को व्यवहार में लाएं।*

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने आशिष प्रदान करते हुए कहा कि–

योगीजी महाराज ने एक बार कहा था कि जैसे बलि राजा के घर भगवान हमेशा के बंधे हुए हैं– पहरा दे रहे हैं, वैसे ही गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज दादुभाई की चौखट पर अखंड पहरा देते रहते हैं। *वे हैं प.पू. काकाजी ! ऐसे प.पू. काकाजी के संबंध में हम आए। इनके साथ जुड़े रहेंगे तो वे प्रभु हमारी भी हमेशा रक्षा करते रहेंगे...*

राणा साहेब के बताने पर हम समझ सके होंगे कि यह कितना बड़ा सत्कर्म पू. काकाजी ने हम से करवाया ! *और कोई बात करे तो ठीक है, पर* ***राणा साहेब तो केबीनेट मिनिस्टर लेवल की व्यक्ति हैं,*** *कोई लल्लु-पंगु नहीं है... बहुत ही होशियार व्यक्ति... गुजरात में जब बी.जे.पी. का*

कोई बेईझ ही नहीं था, तब इन्होंने गुजरात में बी.जे.पी. का झंडा गाड़ा था। ***वो व्यक्ति जब ऐसा कहे कि यह कोई ऑर्डिनरी चीज़ नहीं बनी है– असाधारण काम हुआ है-असाधारण सेवा है !*** *यह असंभव कार्य इन्होंने करा दिया !!*

प.पू. काकाजी की डाक टिकट जारी हो वह मेरी एक मुराद थी। *पू. काकाजी के बारे सुना था कि बचपन में इनकी अत्यधिक शरारतों से परेशान होकर जब उनके दादा ने एक बार कहा कि दादु ! तू बड़ा होकर क्या करेगा ? तब पू. काकाजी ने जवाब दिया था कि दादा ! मैं तो दिल्ली का गवर्नर-बादशाह बनूंगा।* ***यह इंसीडेन्स को लेकर जब मुझे यहां मौका मिला, तो हुआ था कि काकाजी की महिमा का रिकग्नाईजेशन तो दिल्ली में बैठी सरकार से हो ऐसा करना है। प.पू. पप्पाजी ने भी इनके आशीर्वाद में अंतर्यामी रूप से इसी बात का ज़िकर करा...***

काशीरामभाई ने छः महीने में सारा कनक्लूड करा दिया। इसमें बीच में तीन बार तो रिजेक्शन आया। पोस्टल डिपार्टमेन्ट से तो एक बार ऐसा मेसेज भी आया कि ऐसे चाहे सौ रिकमंडेशन्स भेजोगे या प्राईम मिनिस्टर की सिफारिश हो, तब भी यह डाक टिकट जारी नहीं होगी। ***मैं काशीरामभाई को गौर देता हूँ, ना कि इन्होंने यह काम करा इसलिए, बल्कि बहुत एफेक्शनेटली काम किया है।*** *जैसे ही इन्हें प्रपोज़ल रिफ्यूज़ होने बारे का पता चलता, तो मैं जहां भी होऊं तुरंत वहां वे मुझे फोन करते कि आप चिंता नहीं करना, मैं रिकन्सीडर करवाता हूँ ! वे जानते थे कि गुरुजी दुःखी हो गए होंगे। एक बार तो मुझे वापी फोन करके कहा कि गुरुजी आपको रिफ्यूज़ल का मेसेज मिलेगा, पर आप चिंता नहीं करना–मैं फिर प्रमोद महाजन को मिलने जा रहा हूँ। राणा साहेब को मेरे प्रति कितना एटेचमेन्ट होगा–वो इस बात से पता चलता है। इतने अपनेपन से इन्होंने परझीवरन्स करा है। प्रमोद महाजनजी ने जिस दिन एप्रुवल की साईन करी, राणा साहेब ने सारा लेटर मुझे फोन पर जगरांव (पंजाब) में पढ़ कर सुनाया-जबकि उस दिन तो वे वेनेज्युएला जाने की व्यस्तता में थे !*

फिर प.पू. गुरुजी ने दो-तीन प्रसंग बताए... कुवैत का राजा एक बार मुंबई में मोहम्मद अली रोड पर किसी होटल में आया था। भीड़ इकट्ठी होने पर जब उसे पता चला कि सब मेरे दीदार के लिए इकट्ठे हुए हैं, तो उसने सोने की मोहरें लुटानी शुरु कर दी... जिन्होंने वो लूट ली वो निहाल हो गए। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की सवारी में एक लड़के को मुजरा करते देख कर गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा कि इसे 'अक्षरधाम' बख़्शिश में दे दिया... तब आस-पास वाले भक्तों ने कहा कि स्वामी ! यह तो पैसे की लालच में नाच रहा है, यह आपके 'अक्षरधाम' के लिए नहीं नाच रहा। पर, स्वामी ने कहा कि इसे पता नहीं है कि वह किसके सामने नाचा है !

इस तरह जाने-अनजाने ऐसी विभूतियों की कुछ सेवा कर दें, तो वे हमें निहाल कर देते हैं... ***राणा साहेब की यह सेवा साक्षात् अक्षरधाम में जमा हुई है। उसके फलस्वरूप राणा साहेब के लिए काकाजी वील बी ऑलवेज़ एट डिस्पोज़ल एट एनी अवर-एनी व्हेर !***

प.पू. गुरुजी के आशिष वचन के बाद विसर्जन का भजन गाकर सभा विसर्जित हुई। राणा साहेब ने प्रसाद लेकर बहुत ही भावविभोर हृदय से विदाई ली।

✡✡✡

Statement about ownership and other particulars about newspaper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 15 May, 2003

भजन

(राग - हे मारुति सारी राम कथा....)

हे... काकाजी, हे काकाजी,
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले -2
संपर्क में तेरे जो आया...
संपर्क में तेरे जो आया, उसके जन्मों के फेरे टले, हे काकाजी....
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले
जिसने तुमसे संबंध किया...
जिसने तुमसे संबंध किया, उसका तो मूल अज्ञान टले, हे काकाजी....
हे काकाजी गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले,
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी -2

तुम ध्रुवतारक सम पथदर्शी, पथदर्शी, पथदर्शी
हो रवि समान तुम समदर्शी, समदर्शी, समदर्शी
सतयुग है तेरे सान्निध्य में....,
सतयुग है तेरे सान्निध्य में, गुणातीत संत चैतन्यदर्शी, चैतन्यदर्शी, चैतन्यदर्शी;
शूरवीर, निपुण, निडर योद्धा...,
नारायणी सेना के सेनापति, हर प्रसंग पे सबकी ढाल बने, हे काकाजी,
हे काकाजी गुणातीत पीढ़ी के ज्योतिर्धर हमें मौज मिले,
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी-2

जपयज्ञ का मूर्तस्वरूप हो तुम, मूर्तस्वरूप हो तुम;
संबंध से तेरे सनाथ हैं हम, सनाथ हैं हम,
कुसंग जीव का टाल दे जो...
कुसंग जीव का टाल दे जो, ऐसे अक्षर के राजहंस हो तुम -2
तेरे संकल्प और भजन से ही...,
तेरे संकल्प और भजन से ही, सुख धाम का हमको आज मिले, हे काकाजी...
हे काकाजी, गुणातीत पीढ़ी........।।
हे काकाजी, धन्यवाद तुम्हें, हमको गुरुजी भेंट दिए;
जय जय जय काकाजी, जय हो जय जय काकाजी-2

(राग - दिल के टुकड़े-टुकड़े करके....)

स्वानुभव से साधना के गुर काकाजी ने अनेकों दिए,
साधकों को जाग्रत रखने काकाजी ने प्रश्न किए,
दोहराए तो जान ये पाएं उनके कहे पर कितना चले,
साधकों को जाग्रत रखने, काकाजी ने प्रश्न किए।

(राग - क्यों मिथिला में शिवधनुष को तुमने...)

स्त्री पुरुष भाव क्या अंतर से है टल गया ? उत्तर दो, उत्तर दो
ब्रह्मरूप क्या हम हो गए, जीव भाव टल गया ? उत्तर दो, उत्तर दो
योगी बापा ने जिस हेतु हमें दूर किया,
क्या हमने उस निशान को है हासिल किया ?
क्या मन के राज्य को हमने सदंतर छोड़ दिया ? उत्तर दो, उत्तर दो
क्या सद्‌गुरु राज्य में हमने प्रवेश है किया? उत्तर दो, उत्तर दो
भावात्मक एकता के लिए जो बलिदान दिया....
काकाजी ने....... काकाजी ने.......

काकाजी ! हम कहीं तेरा निशान ना चूकें, तेरा निशान कभी ना चूकें,
तेरा निशान कभी ना चूकें

चातुर्मास के नियम... *(10 जुलाई 2003, गुरुवार से 4 नवम्बर 2003, मंगलवार तक)*

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन का पूरा महीना यानि–30 जुलाई से 27 अगस्त तक एक बारी भोजन लें।
5. 10 जुलाई-नियम की एकादशी, 20 अगस्त-जन्माष्टमी, 6 सितंबर-जलझीलनी एकादशी, 4 नवम्बर-कार्तिक शुक्ला एकादशी–इन चारों दिनों अवश्य व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, स्वामी की बातें, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह, ब्रह्मविद्या व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
8. साक्षात्कार स्वर्णस्मृति का वर्ष चल रहा है... प.पू. काकाजी 'स्वामिनारायण' मंत्र पर खूब जोर देते थे। तो, चातुर्मास दौरान रोज मंत्रलेखन का विशिष्ट नियम रखना।

स्वामिनारायण.... जपो निरंतर संत की स्मृति संग......

हर वर्ष की तरह इस बार भी **11 मई '03, रविवार से–12 जून '03, गुरुवार तक**
रोज सुबह 6:30 से 8:15
प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में 'ताड़देव' में जपयज्ञ का कार्यक्रम शुरू हो गया है।
तो,
जो भी मुक्त इस जपयज्ञ में भले थोड़े दिनों के लिए आने की इच्छा रखते हों;
वे यदि हमें पहले से सूचित कर पाएं, तो उनके ठहरने - करने की व्यवस्था कर रखने में हमें सुविधा होगी।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 26.5.2003, सोमवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 27.5.2003, मंगलवार – **गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन**
(3) दि. 1.6.2003, रविवार – **प.पू. पप्पाजी के दृष्टा दिन की स्वर्णजयंती,** गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(4) दि. 10.6.2003, मंगलवार – भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(5) दि. 11.6.2003, बुधवार – भीम एकादशी, व्रत
(6) दि. 12.6.2003, गुरुवार – **ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन** **(सुबह 6:30 से 8:15 मनाएंगे और जपयज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे)**
(7) दि. 25.6.2003, बुधवार – एकादशी, व्रत
(8) दि. 1.7.2003, मंगलवार – रथयात्रा
(9) दि. 10.7.2003, गुरुवार – देवशयनी एकादशी, व्रत– चातुर्मास प्रांरभ
(10) दि. 13.7.2003, रविवार – गुरुपूर्णिमा

'बैसाखी' निमित्त लुधियाना में प.भ. कमल देव के घर सत्संग एवं महापूजा

સંદેશ

સુરત* વડોદરા* અમદાવાદ* રાજકોટ* ભાવનગરથી એક સાથે પ્રગટ થતું દૈનિક

સોમવાર તા. ૭-૪-૨૦૦૩

સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના કાકાજી મહારાજની સ્મૃતિમાં ટપાલ ટિકિટ

સુરત,તા.૭ સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના એક અંગ યોગી ડિવાઈન સોસાયટીના આદ્ય સ્થાપક પૂ. કાકાજી મહારાજ (પૂ. દાદુભાઈ પટેલ)ની સ્મૃતિમાં કેન્દ્ર સરકાર દ્વારા અ.પુ. ... યોગી ડિવાઈન સોસાયટીના વડા પૂ. હરિપ્રસાદ સ્વામીજીએ આશીર્વચન ઉચ્ચાર્યા હતા. પૂ. પપ્પાજીએ દિવ્ય સંદેશ પાઠવ્યો હતો. મંત્રીશ્રી વલ્લભભાઈ કથીરિયા પણ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. સમગ્ર આયોજન દિલ્હી ...

સ્વકર્મણા તમભ્યર્ચ્ય સિદ્ધિં વિન્દતિ માનવઃ

સંદેશ

સુરત* વડોદરા* અમદાવાદ* રાજકોટ* ભાવનગરથી એક સાથે પ્રગટ થતું દૈનિક

રવિવાર તા. ૧૭-૧૧-૨૦૦૨

બ્ર.સ્વ. કાકાજી મહારાજની સ્મૃતિમાં ૨૦૦૩માં ટપાલ ટિકિટ બહાર પડશે

સુરત, તા. ૧૬ ... યોગી ડિવાઈન સોસાયટીના સ્થાપક બ્રહ્મ ... સ્મૃતિમાં એક ટપાલ ટિકિટ બહાર પાડવાની ... જનતા અને સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના ... ઇચ્છાને સમજીને વસ્ત્રમંત્રી શ્રી કાશીરામ ... ૫૦મા વર્ષને અનુરૂપ એક ટપાલ ટિકિટ ... પ્રમોદ મહાજન જોડે કરી હતી. ... માં વસ્ત્ર મંત્રી શ્રી કાશીરામ રાણાએ ... ર્મિક અને સામાજિક કાર્યો ...

કરમસદના કાકા... ટપાલ ટિકિટ બહાર ...

(સં.ન્યુ.સ.) આણંદ તા. ૧... ગુજરાતના સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના પ્રસિદ્ધ સ્વામિ સ્વર્ગીય શ્રી દાદુકાકા (કાકાજી મહારાજ)ની સ્મૃતિમાં એક ટપાલ ટિકિટ બહાર પાડવાનો નિર્ણય લેવામાં આવ્યો છે. ગુજરાતની ધાર્મિક જનતા ... સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના ...

પ. પૂ. કાકાજી મહારાજની ...

નવી દિલ્હી, તા. ૩૧: અક્ષર ... તાજેતરમાં યોજાયેલ ...

સ્થાપના: ૧લી જુલાઈ ૧૮૨૨

મુંબઈ સમાચાર

THE BOMBAY SAMACHAR

મુંબઈ. ગુરુવાર, તા. ૨૭મી માર્ચ ૨૦૦૩ : Thursday 27th March 2003

પૂ. પૂ. કાકાજી ... ટપાલ ટિ...

સ્વામીનારાયણ સંપ્રદાયના બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુહરિ યોગીજી મહારાજના આધ્યાત્મિક વારસદાર પૂ. કાકાજી મહારાજની સ્મૃતિમાં એક ટપાલ ટિકિટ બહાર પાડવાનો કાર્યક્રમ દિલ્હીમાં યોજાનાર છે. કાકાજી મહારાજના માનસપુત્ર પૂ. ગુરુજીના ૬૬મા પ્રાગટ્ય દિનના ઉત્સવ પર ૩૦મી માર્ચે રવિવારે સાંજે ૫.૩૦ કલાકે શ્રી અક્ષર પુરુષોત્તમ સ્વામીનારાયણ મંદિર, તાડદેવ, કાકાજી લેન, સ્વામિનારાયણ માર્ગ, અશોકવિહાર - ૩, દિલ્હી-૫૨ ખાતે આ કાર્યક્રમ યોજાનાર છે. આ પ્રસંગે કેન્દ્રના સંદેશવ્યવહાર તથા ડિસઈન્વેસ્ટમેન્ટ ખાતાનાં પ્રધાન અરુણ શૌરી, પૂ. હરિપ્રસાદસ્વામિજી, પૂ. અક્ષરવિહારીસ્વામિજી, પૂ. હરિભાઈ સાહેબ, પૂ. દિનકરભાઈ, ...

मैं खूब नसीबदार हूँ कि मैंने यह एक काम किया,
पर उसका कितना बड़ा लाभ मुझे मिल गया ! — मा. राणा साहेब

...એક્સપ્રેસ ગ્રુપનું દૈનિક

...ળવાર ૧ એપ્રિલ ૨૦૦૩

...લ ટિકિટનું અરુણ શૌરીને હસ્તે

...સ્વામિનારાયણ) મંદિર અશોક વિ... ...રંભમાં સંદેશવ્યવહાર, આઇટી ...

...મીનારાયણ સંત પૂ. ... સ્મૃતિમાં ટપાલ ટિ...

સ્વામીનારાયણ સંપ્રદાયના બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુ... ...ારસદાર પૂ. કાકાજી મહારાજની સ્મૃતિમાં ... માનસપુત્ર ... વારે સાંજે ... કાકાજી લેન, ... ર્યક્રમ યોજાયો ... ખાતાનાં પ્રધાન ... પૂ. હરિભા...

ગુર્જરમાન — ધરતી પર સ્વર્ગ

જન્મભૂમિ

ગુજરાત ધારો

દિલ્હી થી પ્રકાશિત થતું એકમાત્ર ગુજરાતી પાક્ષિક

R.N.I. 28971/ 77 '**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Printed at : **Delux Offset Printers,** 308/4, Shahzadabagh,
Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi